शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 6 | उदयपुर शुक्रवार 1 अप्रेल 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

शाही ठाठ से निकलती गणगौर की सवारियां

-डॉ. तुक्तक भानावत-

सुख, सुहाग एवं समृद्धि की कामना के लिए गणगौर का त्यौहार मनाया जाता है। उदयपुर में आजादी पूर्व महाराणा की भव्य सवारी निकलती थी। राजपरिवार के साथ विभिन्न समाजों की गणगौरें पिछोला के किनारे त्रिपोलिया पर पहुंचती थी। त्रिपोलिया वाला घाट आगे जाकर गणगौर घाट के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस घाट के किनारे महिलाएं अपने-अपने समाज की गणगौरों की पूजा करती हैं और उनके सामने बड़ा ही मनमोहक घूमर नृत्य करती हैं। महाराणा सज्जनसिंह ने इस अवसर पर पहली बार नाव की सवारी प्रारंभ की जिसका जिक्र महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले घूमर गीतों में मिलता है- हेली नाव री असवारी सज्जन राण आवे छै अर्थात हे सखी, नाव की सवारी किए राणा सज्जनसिंह आ रहे हैं।

आजादी के बाद राजपरिवार द्वारा गणगौर की सवारी बंद हो गई किन्तु विभिन्न समाजों द्वारा गणगौर की सवारी आज भी बदस्तूर जारी है। इस बीच सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा पिछले कुछ वर्षों से यह उत्सव मेवाड़ महोत्सव के नाम से प्रारंभ किया गया। यह महोत्सव तीन दिन का होता है। इसमें विभिन्न समाजों की गणगौरों में से प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वाली श्रेष्ठ गणगौर को पुरस्कृत किया जाता है। इस अवसर पर श्रेष्ठ विदेशी दम्पत्ति का चयन कर उसे पुरस्कृत किया जाता है।

गणगौर घाट पर गणगौर-ईसर के जुलूस में विभिन्न समाजों की गणगौरें

उदयपुर से 22 किलोमीटर दूर आदिवासी जन जीवन के लिए गोगुन्दा में गणगौर का उत्सव मनाया जाता है। रात्रि को मेले के रूप में आसपास के गांवों से सैंकड़ों की संख्या में नाचते-गाते आदिवासियों का रेला उमड़ पड़ता है।

उदयपुर की गणगौर

ऐसा कहा जाता है कि यहां के राजघराने से संबंधित वीरमदास की गणगौर नामक एक बहुत ही सुन्दर कन्या थी जिसे चाहने वाले कई राव रईस थे। बुंदी के ईसरसिंह के साथ जब उसका संबंध कर दिया तो कइयों को ईर्ष्या हुई और वे गणगौर को प्राप्त करने में लग गए। इस बात का पता जब ईसरसिंह को लगा तो वह उदयपुर आया और अपने घोड़े पर गणगौर को बिठाकर चलता बना। कहते है मार्ग में चम्बल नदी पूरी वेग के साथ बह रही थी। ईसरसिंह ने अपना घोड़ा उसमें छोड़ दिया। परिणाम यह हुआ कि नदी घोड़े सहित ईसरसिंह और गणगौर को ले भागी। इस संबंधी यह गीत आज भी सुनने को मिलता है-

उदियापुर से आई गणगौर
ईसर ले चाल्यो गणगौर
चम्बल ब्हेती जावे पूर
डूब्यो घोड़ो ईसर ने गणगौर
गणगौर और ईसर काठ यानी लकड़ी के बनाये जाते हैं। इनको बनाने वाले खैरादी अथवा सुथार जाति के कलाकार होते हैं। चित्तौड़ जिले के बस्सी गांव के खैरादी बड़ी कलात्मक गणगौर और ईसर बनाने में दक्ष हैं। यहां के काष्ठशिल्पी मांगीलाल ने बताया कि बस्सी में यह परम्परा पिछले दो हजार वर्ष से चली आ रही है। गणगौर और ईसर लकड़ी में विभिन्न अंगों को उभारकर बनाने के साथ-साथ सादे रूप में भी बनाये जाते हैं। रंगों से उनका रूप निखारा जाता है।

-शेष पृष्ठ 6 पर

नाव में गणगौर नाच

-स्मार्टसिटी के लिए सबक-

सजा का प्रतीक ताला

ताला सुरक्षा का ही प्रतीक नहीं, सजा का भी प्रतीक है। यह सजा किसी व्यक्ति अथवा पंच-पंचायती द्वारा नहीं दी जाकर न्यायालय द्वारा दी जाती है। ऐसे भी उदाहरण सुनने को मिले हैं जब अदालतों के आदेश के प्रति लापरवाही बरतने पर मजिस्ट्रेट ने कुर्की आदेश चस्पा कर ताला लगवा दिया। उदयपुर में ऐसी अवज्ञा के बदले अदालत ने नगर परिषद के विरूद्ध कड़ा रूख अपनाकर जो कदम उठाया उससे इस तरह अवज्ञा के आदी अधिकारियों व अन्य लोगों को जोरदार सबक मिला।

यहां कृष्णपुरा निवासी कानून के छात्र अरविन्द यादव (20) ने 12 फरवरी 1987 को मुंसिफ एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट (उत्तर) की अदालत में एक याचिका पेश की। इसमें कहा गया कि उसके घर के आसपास के इलाकों में गंदगी के ढेर लगे हैं। नालियां रूकी पड़ी हैं। उसने अदालत से अनुरोध किया कि नगर परिषद को सफाई करने के लिए पाबन्द किया जाए ।

अतिरिक्त सेशन जज शालिग्राम चौहान ने 4 जुलाई 1987 को मुकदमें का फैसला सुनाते हुए नगर परिषद को एक महीने की अवधि में प्रार्थी अरविन्द यादव के मकान के आस-पास के क्षेत्र से गन्दगी हटाने, सार्वजनिक शौचालयों की मरम्मत करने व नालियों को ठीक कराने का आदेश दिया मगर अदालत के इस आदेश की नगर परिषद के अधिकारियों ने कोई परवाह नहीं की। उल्टे उन्होंने इसे चुनौती के रूप में लेकर यह देखने की ठान ली कि अदालत सफाई कैसे करवाती है।

अरविन्द यादव के मकान के आसपास गन्दगी लगातार बढ़ती रही । हालात में कोई बदलाव न देख कर यादव ने 4 नवम्बर 1987 को अदालत की अवमानना की शिकायत दर्ज कराई। नगर परिषद के अधिकारी इस सबको हल्के रूप में ही लेते रहे। अदालत में उपस्थित होने के चार-चार आदेशों की अवहेलना कर वे अपनी दिलेरी के लिए खुद ही अपनी पीठ थपथपाते रहे।

उनका हौसला इतना बढ़ा कि मुकदमा ठोकने की सजा के बतौर वे सफाईकर्मियों के माध्यम से अरविन्द यादव के मकान के आसपास और अधिक कचरे के ढेर लगवाने लगे। 17 दिसम्बर 1989 को तब इन्तहा हो गई जब सफाई कर्मचारी यादव के मकान के एन सामने ही कचरे के ढेर पर एक मरा हुआ कुत्ता डाल गये। इसके बाद उस इलाके के लोगों को जिस असहनीय दुर्गन्ध का सामना करना पड़ा। उसकी याद ताजा कर आज भी वे सिहर उठते हैं। नगर परिषद से बार बार आग्रह करने के बावजूद कुत्ते को हटाया नहीं गया बल्कि उस पर और कचरा डाल कर दबा दिया गया।

अरविन्द यादव

नगर परिषद के अधिकारी उस वक्त थोड़े हिले जब 17 जनवरी 1990 को मुंसिफ एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रमोद कुमार माथुर ने नगर परिषद को अदालत की अवमानना का दोषी ठहराते हुए परिषद की समस्त चल अचल सम्पत्ति कुर्क करने का आदेश जारी कर दिया। फिर 30 जनवरी को जब अदालत द्वारा नियुक्त कुर्की अमीन घनश्याम आमेटा ने नगर परिषद कार्यालय में पहुंच कर प्रशासक को कुर्की वारन्ट पढ़ सुनाया तो उनके साथ ही खड़े सभी अधिकारी व कारिन्दे हतप्रभ रह गये। अब तक खुले आम अदालती आदेशों का उल्लंघन करते आ रहे अफसरों की उस दिन जबान तक नहीं खुल सकी। कुर्की - अमीन के साथ आर. ए. सी. के दस जवान और सूरजपोल थाने की पुलिस मौजूद थी।

कुर्की-अमीन आमेटा ने नगर परिषद की सभी संपत्तियां, जिनमें फर्नीचर, सोफा, टेलीफोन व दीवार घड़ी तक शामिल थी, की सूची बना परिषदकर्मियों को बाहर निकलने का आदेश दिया। इसी के साथ उसने परिषद भवन के मुख्य दरवाजे पर कुर्की आदेश चस्पा कर सील सहित ताला लगा दिया।

ऐसी अप्रत्याशित कुर्की व तालाबन्दी की घटना हो जाने के बाद परिषद के स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एस. के. बृजवासी सफाईकर्मियों के दल सहित अरविन्द यादव के घर के आसपास के इलाके की युद्ध स्तर पर सफाई कराने में जुट गये।

दूसरे दिन नगर परिषद ने अदालत को यह जानकारी देते हुए कि अरविन्द यादव के मूल वाद में वर्णित शिकायतों का समाधान कर दिया गया है, प्रशासक के कार्यालय पर लगे ताले को खुलवाने की गुहार की मगर नगर परिषद अधिकारियों की बात पर विश्वास करना अदालत को उचित नहीं लगा। मुंसिफ मजिस्ट्रेट ने सफाई व्यवस्था के मुआयने के लिए कमिश्नर को नियुक्त किया। आखिरकार पहली फरवरी 1990 को नगर परिषद के कमिश्नर पुष्कर नारायण माथुर के बिना शर्त माफी मांगने व तीन हजार रूपये के सिक्यूरिटी बांड भर कर पेश किये जाने के बाद अदालत ने परिषद कार्यालय पर लगे ताले को खोलने के आदेश जारी किये।

स्मृतियों के शिखर (6) : डॉ. महेन्द्र भानावत

धारा के विपरीत नई धारा बनाने वाले मोहन भाई

अणुव्रती मोहनलाल जैन जिन्हें सब मोहन भाई के नाम से जानते हैं, संघर्ष को वरण करने वाले, कठोर पुरूषार्थी, कभी हार न मानने वाले, निरन्तर सजग रहने वाले, आत्म चेतना से लबालब उन स्नेहशील व्यक्तियों में से थे जो संयमी तथा स्वाभिमानी बन अपना मुंडेर अपने रंग से सजाने वाले होते हैं और तुनकमिजाजी में अपने द्वारा निर्मित प्रशस्त धरोहर को घर दीन्ही चदरिया की तरह छोड़ चलते बनते हैं किसी और नये क्षितिज की तलाश में।

मोहन भाई ने अपने क्षितिज स्वयं तलाशे। सहयोग मिला तो अपने स्नेहीजनों से, मित्रों से जिन पर उन्होंने अटूट विश्वास किया। मित्रों ने भी उन्हें भरपूर संबल दिया। जब-जब भी उनसे भेंट हुई, उन्होंने अपने मित्रों की देन का जिक्र किया और बार-बार कहा कि वे स्वयं कुछ नहीं हैं, यदि कुछ हैं तो मित्रों की वजह से ही हैं। अणुविभा (अणुव्रत विश्व भारती) राजसमंद से उन्होंने मुझे लिखा भी -' पत्र द्वारा आपकी प्रेरणाप्रद, उत्साहवर्धन स्नेहधारा पाकर मैं कृतकृत्य हो गया। आपकी कलम से इस प्रकार की स्नेहधारा विरले को ही प्राप्त होती होगी। देवेन्द्रजी कर्णावट तो देव स्वरूप मुझे पहले से ही प्राप्त हैं। श्री चम्पावत साहब (चन्द्रेश चम्पावत) का देव स्वरूप गत दो-तीन वर्षों से प्राप्त है। आप जैसे मित्रों की उपलब्धि मेरा अहोभाग्य है। मित्रों ने मुझे सदा आगे सरकाया है अन्यथा मैं हूं भी क्या?' अपने द्वारा लिखे गये पत्रों में मोहनजी ने अपने को अकिंचन ही माना और मित्रों की दरियादिली की प्रशंसा ही नहीं की, अपने संबंधों को भी सुदृढ़ बनाये रखा। मैंने देखा, मोहनजी के जीवन में कभी ठंडापन नहीं रहा। वे आग के गोले की तरह सदैव तपन में रह, संघर्षशील बने रहे। अकेले ही आगे बढ़ते गए। कई बार मित्रों की राय उनके अनुकूल नहीं होती तब भी वे अपने संकल्प पर दृढ़ रहकर अपनी स्वच्छन्दता बनाये रखते और अनुकूल परिणाम हाथ नहीं लगने पर विनम्रता से उसे स्वीकार कर आगे की सुध लेते पर मित्रों के वर्चस्व को जरा भी कमजोर, ठंडा याकि मंदा नहीं बनाया। उन्होंने अपने जीवन को ताबड़तोड़ भागमभाग का आदी बना लिया और वे निधड़क, निर्भय, निश्चिंततापूर्वक बढ़ते रहे। इसी पत्र में उन्होंने मुझे लिखा-' अणुविभा की प्रगति और विकास तथा सफलता में आप भागीदार हैं। मैं मंजिल की ओर ताबड़तोड़ भागना चाहता हूं। बीच का पथ कठिन है। कठिन पथ पर चलने का मैं आदी हो गया हूं।'

(10 दिसंबर 1988 को लिखे पत्र से)

मोहन भाई मुझसे अधिक मेरे लेखन से आकृष्ट हुए। स्वभाव तो उनका-मेरा एक जैसा ही रहा, अक्खड़पन का, स्पष्ट कहने, सुनने, सुनाने का। यह गुण सबके प्रिय भाजन नहीं होने का ही कहा जायेगा पर सबकुछ जानते हुए भी एक व्यसनी की तरह क्यों कोई इसे पाले रखता है? मोहन भाई का आकलन मैंने सही-सही किया हो, न किया हो पर उन्होंने तो एक पत्र में मेरी परख कर ही दी। इससे लगा कि वे मित्रों को अपनी पैनी दृष्टि से खूब कुरेदते हैं और तदनन्तर अपने मन के आइने में उसकी तस्वीर उतारते हैं। इससे उनकी मेरी सन्निकटता और उसको ठीक से आकलित करने का गहरा जुड़ाव भी परिभाषित हुआ लगता है। वे लिखते हैं-

'मेरे मित्रों में कुछ चोटी के व्यक्तित्व हैं। उनमें से ही एक आप हैं। आपका जीवन कांटों भरा रहा और आप कांटों में फूल खिलाते रहे। अप्रियता को चुनौती मानी। खरापन लोगों को अखरा पर खोटापन नहीं पकड़ा। जीवनमूल्यों की तलाश में रहे। छोटा समझने वालों की वेदना और मानवीय संवेदनाओं को आपने पहचाना एवं मानवोचित महान परम्पराओं से जुड़े रहे। अनुभव लेते रहे और अनुभवों को वाणी देते रहे। प्राकृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, यांत्रिक, तांत्रिक एवं लोकतांत्रिक आदि से संबंधित स्थलों, दृश्यों, व्यक्तित्वों को समझा, पढ़ा, लिखा और उनको अवेरा। लगता है कि आप रोमांटिकता और अद्‌भुतता में रूचि रखते हैं। सचमुच, आप विलक्षण बुद्धि के धनी हैं।'

(29 अप्रेल 1996 को लिखे पत्र से)

इस पत्र को मैंने कई बार पढ़ा। मुझे हर समय लगा कि मोहन भाई ने जो बातें मेरे लिए लिखी हैं वे तो उनके स्वयं के साथ अधिक घटित हुई हैं। उनके लिए मैं भी तो यही लिखना, कहना चाहता हूं जो कई बार उन्हें कही और लिखी भी जा चुकी है। मैंने हर बार, हर समय, एकान्तिक बातचीत में मोहन भाई को ऐसा ही पाया।

आचार्यश्री तुलसी का सान्निध्य और स्नेह मोहन भाई के जीवन का अनिर्वचनीय उपहार रहा। उन्हीं के कारण वे अणुव्रत से जुड़े, अणुव्रती बने और अणुविभा का संपोषण किया लेकिन सही और सच कथन को सदैव आगे रखा। मुझे भी मोहन भाई ने आचार्यश्री का सान्निध्य दिलाया। पहला परिचय ही उनसे बीदासर में अणुव्रत सम्मेलन में हुआ। तब देवीलाल सामर अ.भा. अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बने। सामरजी के साथ मैं भी अणुव्रत समिति का सदस्य रहा पर मोहन भाई की तरह का अणुव्रती नहीं बन सका।

अणुव्रत की बिरादरी से हमारे छूटने का कोई मलाल किसी को नहीं रहा। हम थे ही क्या पर मोहन भाई तो अणुविभा की नाक थे। उन्हीं से वहां सारी चमकदमक थी। उन्हीं ने उसे पौधे से पेड़ बनाया और देखते-देखते वह मोहन भाई से फिसल गया। इसका कारण न कभी मोहन भाई ने बताया और न हमने जानने की जिज्ञासा ही रखी लेकिन मुझे मोहन भाई का वह कथन अवश्य याद रहा जो उन्होंने मुझे 13 जून 1990 के पत्र में लिखा-

'अणुविभा आचार्यश्री तुलसी के अणुव्रत का ही एक अंग है। अणुव्रत की विचारधारा व्यापक होते हुए भी एक संकुचित घेरे में आबद्ध है। उस संकुचितता से मुक्त रहने का मेरा प्रयास यथासंभव रहता है फिर भी जो है उससे इन्कार नहीं किया जा सकता।'

इसी क्रम में मोहनजी ने अपने बाल्यकाल की उस घटना का उल्लेख किया जिससे उन्होंने समाज की कठोर असहिष्णुता को झेला और फलस्वरूप वे विद्रोही बना दिये गए। लिखा- '' मेरा बाल्यकाल साधु-संतों के बीच बीता। मैं स्वयं साधु बनने की धुन में रहा। जब मैं तीन वर्ष का था, तभी मेरे पिताश्री साधु होगए थे और जब चौदह वर्ष का हुआ तब उन्होंने साधुपन छोड़ दिया। उस समय पिताजी के साथ, परिवार के साथ और मेरे साथ समाज का जो अमानुषिक व्यवहार रहा, उसने मुझे विद्रोही बना दिया।''

अकेले आचार्य तुलसी ऐसे मतिमान और साहसी धर्माचार्य थे जिन्होंने मोहनजी को अपना स्नेहिल सान्निध्य दिया। इससे मोहनजी के परिजनों को बड़ा संबल मिला। उन्होंने लिखा- 'विद्रोह के बावजूद आचार्यश्री तुलसी के स्नेह ने मुझे अपने से जोड़े रखा। मैं बहुत कम आता जाता था फिर भी वे मुझे निकटता देते रहे। लम्बे अंतराल के बाद उनके स्नेह ने और उनके द्वारा संघ और समाज में लाए गए प्रगतिशील बदलाव ने मुझे पूर्णरूपेण अपनी ओर खींच लिया। उनके द्वारा प्रदत्त महत्वपूर्ण निकटता के बावजूद भी समाज से मैं कटा रहा। आज भी कटा सा ही हूं। उपेक्षित और संघर्षरत जीवन ने मुझे कुछ अपवाद के सिवाय अकेला बनाये रखा। मुझे यदि शुद्ध स्नेह मिला तो मेरी मां और मेरी पत्नी का मिला या फिर आचार्यश्री तुलसी का। मित्रों का स्नेह जो मुझे प्राप्त है वह पूर्ण शुद्धता की श्रेणी में नहीं आता। स्नेह के साथ जो मिश्रण है वह मुझे संतोष प्रदान नहीं करता।'

मोहन भाई के जीवन में उनकी सहधर्मिणी भागीरथी बेन का जो योगदान रहा वह कइयों के लिए प्रेरणा का पूंजीभूत बना। मैं भी उसका साक्षी रहा। अवसर था अणुविभा में जब उन्होंने अपना 70 वर्षीय जन्मदिन और 50 वर्षीय वैवाहिक जीवन का आत्मीय आयोजन किया। 23 मई 1989 को आयोजित इस स्नेह मिलन में मैंने मोहन भाई और भागीरथी बेन को खादी की शुभ्रता सी मन की पवित्रता लिये देखा। इस स्मरणीय आयोजन में मैंने मास्टर बलवंतसिंह मेहता, कमला श्रोत्रिय, चंदनमल बैद, हीरालाल कोठारी, बुधमल शामसुखा, उत्तमचंद सेठिया, देवेन्द्र भाई कर्णावट जैसे समाज, शिक्षा और धर्म क्षेत्र के लोकमान समर्पितों का सान्निध्य पाया।

आदर्शमना कमलाजी और भागीरथी बेन के मैंने पहलीबार दर्शन किये। चंदनमल बैद ने जब भागीरथी बेन की समाजसेवी प्रवृत्तियों का उल्लेख किया तो मैं दंग रह गया। इस प्रसंग को मैंने दैनिक जय राजस्थान के 4 जून के अंक में अपने चलते-चलते स्तंभ में लिखा- 'मोहनजी की यह कस्तूरबा सचमुच में भागीरथी है। विवाह के बाद पढ़ना-लिखना प्रारंभ कर घर की सारी जिम्मेदारी संभाली। पर्दा हटाने का मन हुआ तो सासूमां की इच्छा से खद्दर पहनना शुरू कर महिला समाज में जागरण का पथ पकड़ लिया।

-शेष पृष्ठ सात पर

होली के रंग हजार

शब्द रंजन के पिछले होली अंक पर प्राप्त चिट्ठियां-

खोपड़ा फोड़ होली :

शब्दरंजन के होली अंक में हास्य-व्यंग्य के कई मजे तो हैं ही, जानकारी भी भरपूर है। होली के कई रूपों में चित्तौड़ के घोसुंडा की होली सबसे निराली है जिसे दो दल आमने-सामने खड़े होकर पत्थरों की वर्षा कर एक-दूसरे के सिर पर वार करते हैं इसलिए इसे दूर-दूर तक खोपड़ा फोड़ होली के नाम से जानते हैं।

मेरे एक परिचित दामोदरलाल औदिच्य जो वल्लभनगर के रहने वाले हैं और घोसुण्डा के जंवाई हैं, धुलंडी पर सन् 1950 में ससुराल की मौज मनाने गये तो उन्होंने यह विचित्र परंपरा देखी। कहने लगे, खाने के बाद जब हम बाजार जाने लगे तो ससुराल वालों ने हमें टोका कि बाजार मत जाओ, यहां खोपड़ा फोड़ होली होती है। यह सुन उसे देखने की मेरी उत्सुकता बढ़ गई। इस दिन गांव वाले सवेरे रंग खेलते हैं और फिर हुरियारे दो दलों में बंट जाते हैं। श्मशान की ओर बसनेवाले मसाणिया दल बनाते और तालाब की ओर बसनेवाले खापड़िया दल में जा घुसते। दोनों दल के नेता अपने-अपने निशानेबाज और होशियार साथियों के साथ गांव के बीचोंबीच लक्ष्मीनारायण मंदिर के आजू बाजू खड़े हो जाते हैं। निशानेबाज अपने रंग ढंग देख पत्थर एकत्रित करना शुरू कर देते हैं। बालबच्चों टिंडर-मिंडर पत्थर फोड़ने और कंकर पत्थर इकट्ठे करने में जुट जाते हैं। जिसके पास जितने पत्थर होते हैं वह उतना ही धनी माना जाता है। कुछ देर बाद दोनों दल एक-दूसरे का 'हुर्या' उड़ाना शुरू करते। जैसे ही किसी को कोई 'हुर्या' अखरता वह जोर से प्रतिद्वंद्वी पर पत्थर फैंकता। वदावदी में एक-दूसरे से बदला लेने के लिए भी पत्थर पर पत्थर, कंकड़ पर कंकड़, ढकलिए पर ढकलिए फैंक ईंट का जवाब पत्थर से देने पर पत्थर वर्षा होती। पत्थर मंदिर से टकराते जिसके निशान उस मंदिर के छज्जों, नक्काशी और वास्तु नमूनों के टूटन के रूप में देखे जा सकते हैं। निशानेबाज इतने होशियार होते कि पृथ्वीराज चौहान का निशाना याद आ जाता।

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

तलवार की गेर :

होली के तीसरे दिन चैत्र शुक्ला द्वितीया जिसे जमरा बीज कहते हैं, को मेनार गांव में मेनारिया ब्राह्मणों द्वारा मुगलों से संघर्ष कर उन्हें पटकी देने की संघर्ष-स्मृति के रूप में तलवारों से गेर खेलने के रूप में उत्सवी आयोजन दूर-दूर तक प्रसिद्ध है। बांकिये तथा ढोल की गूंज पर क्या युवा, बाल, वृद्ध सभी के सभी अपने एक हाथ में तलवार तथा दूसरे हाथ में लाठी लेकर वीर रस को साक्षात् कर देते हैं। परंपरानुसार पांच मशालची पांच अलग-अलग रास्तों पर मशाल जलाये खड़े होते हैं। रात्रि को करीब सवा 11 बजे पांचों रास्तों से पांच समूह युद्ध वीरों की पोशाक में सजधज रणबाजों सा उत्साह और शौर्य लिए चारभुजा मंदिर के पास वाले चौक में पहुंच रमना शुरू करते हैं। मेनार उदयपुर से 45 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 76 पर स्थित है।

-नानाराम वैरागी

अंगारों पर दौड़ :

डूंगरपुर से 45 किलोमीटर दूर कोकापुर गांव में धधकते अंगारों पर चलने की होड़ लिए गांववासी होली के दूसरे दिन होली दहन स्थल, होलीथड़े प्रात: स्नान के पश्चात पहुंचते हैं। मनचाही मुराद पूरी करने के लिए यह दौड़ होती है। कहा जाता है कि कभी साधु-संतों ने गांव की रक्षा के लिए यह आयोजन किया था तब से परम्परा के रूप में इसका निर्वाह आस्था के साथ किया जाता है। धुलंडी की संध्या को डूंगरपुर के आदिवासी बहुल गांव भीलूड़ा में पत्थरों की बौछार देते राड़ खेलने की परंपरा प्रसिद्ध है। रघुनाथ मंदिर के सम्मुख खुले मैदान में इस पत्थरमार होली का आयोजन साहस तथा शौर्य का रोमांच लिए होता है। ढोल नगाड़े तथा कौड़ियों की गूंज पर दो दल आमने-सामने गोफण द्वारा पत्थर वर्षा करते हैं। गोफण सूत की रस्सी की बनी कलात्मक गुलेल होता है। इस खेल में जमीन पर खून गिरना शुभ माना जाता है। खून का दरसाव नहीं होने पर गांव के लिए अनिष्ट होने का सूचक समझा जाता है।

-अनिल वैष्णव

जलती लकड़ी से खेल :

सागवाड़ा के चीतरी गांव में होली में जल रही लकड़ियों से खेलने की रोमांचक परम्परा है। जलती लकड़ियां एक-दूसरे पर फैंककर मजा लेने की यह प्रस्तुति उम्बाड़ियों की होली कहलाती है। धुलंड़ी को अल सुबह पाटीदार चौराहे पर होली की अग्नि से जली लकड़ियों से होली खेलते हैं। इसमें पाटीदार युवा भाग लेकर बीच गोलाई में रस्सी से बंधे नारियल को लाने का उपक्रम किया जाता है। यहां से युवा समूह बड़गी गांव के होली चौक में कंडों की राड़ खेलते हैं जिसमें एक-दूसरे पर गोबर के कंडे फैंके जाते हैं।

-शेषमल सरावगी

नकली वर-वधू वनोली :

बांसवाड़ा के बड़ोदिया गांव में नकली दूल्हा-दुल्हन बना दो लड़कों का विवाह कराया जाता है। होली पूर्व चौदस को यह आयोजन होता है। रात्रि को ढोल की थाप के साथ गैरियों का समूह लड़कों को खोज में निकल पड़ता है। पहले जो लड़का मिल जाता है उसे वर तथा बाद वाले को बधू बनाया जाता है। ये लड़के अविवाहित तथा यज्ञोपवित विहीन होते हैं। लक्ष्मीनारायण मंदिर चौक पर बने मण्डप में नकली विवाह करा गाजेबाजे के साथ इन्हें उनके घर पहुंचाया जाता है। इस परंपरा के पीछे सामाजिक सौहार्द्र का एक्य भाव रहा है। पहले इस गांव में खेडुवा जाति के लोग निवास करते थे। गांव के बीच नाला होने से दो भागों में बंटा था। दोनों भागों के लड़कों की आपस में शादी हो जाने से दोनों पाटों के बीच सौहार्द्र रहता था। इसी पारिवारिकता के चलते कभी दोनों भागों में मनमुटाव नहीं रहा। कुछ इलोजी की परम्परा का हवाला भी देते हैं।

-कमलेश शर्मा

खीच चढ़ाना :

डूंगरपुर के खड़गदा गांव में प्रथम संतान प्राप्त दंपत्ति समूह रूप में ढोल व कुंडी वाद्य वादन के साथ क्षेत्रपाल दादा को खीचड़ा चढ़ाते हैं। यह चावल तथा मूंग की दाल मिश्रित सवा किलो देशी घी से बना अधपका खीच होता है। खीच पात्र सिर पर धारण कर महिलाएं मंगल गीतों के साथ शोभायात्रा लिए निकलती हैं। दादा के दरबार में पूजा-अर्चना कर शिशु के लिए दीर्घायु की कामना करती हैं। वहीं नवजात को गुड़-मिश्री से तोला जाकर उसे प्रसाद रूप में वितरित किया जाता है। टोलकिया औदिच्य ब्राह्मण समाज द्वारा सामूहिक भोज होता है जिसमें खीचड़ा, दाल और छाछ का छककर आनंद लिया जाता है।

-जयप्रकाश व्यास

-शेष पृष्ठ सात पर

पोथीखाना

लोक की दर्शना से जुड़ी भारतीय लोकनाट्यों पर पहली पुस्तक

'भारतीय लोकनाट्य' का देखन-लेखन मेरे पिछले 50-60 वर्षों का प्रतिफल है। राजस्थान और उसके बाहर जहां-जहां भी मैं गया, जिन-जिन से मैं मिला तथा जो कुछ सुना, देखा, समझा उसको अपने चित्त में रमाकर कागज-मसि हुआ हूं। लोकनाट्य लोकजीवनानुभवों की मेरु-शक्ति होते हैं। इनमें लोक की सम्पूर्ण ज्ञान-सम्पदा के रूप-रंग आकाश में तारों की तरह जड़ाव लिए शोभित होते हैं। गीत, नृत्य, संगीत, स्वांग, अभिनय, संवाद तथा शारीरिक संकेतों के माध्यम से जन-मन-रंजन को रसवान बनाने में इन्होंने जबर्दस्त भूमिका दी है। इनका कोई लिखित शास्त्र नहीं होने पर भी ये कंठासीन जनशास्त्र की गंग-धारा के उछाव की तरह अनुशासित बहाव लिए प्रवहमान बने रहते हैं। लिखित शास्त्रों से दूर इनके मापदंड लोकपन की कसौटी पर खरे उतरकर संस्कारित हुए स्वीकारोक्ति पाते हैं। सच तो यह है कि लोकानुरंजन की सभी विधाओं का सांगोपांग परिदर्शन ही लाकनाट्यों की सबसे बड़ी संपदा है। **-डॉ. महेंद्र भानावत**

साठ बरस की एकाग्रता
-बालकवि बैरागी-

पिछले दिनों मुझे उदयपुर में रचे बसे वत्सल मित्र भाई डॉ. श्री महेन्द्र भानावत का नव प्रकाशित ग्रंथ 'भारतीय लोकनाट्य' उपहार में मिला। किसी भी स्तर पर यह ग्रंथ उन ग्रंथों की श्रेणी में रखा जा सकता है जिन्हें पारखी और सुधि पाठक हिन्दी जगत के श्रेष्ठ लोक ग्रंथों के रत्नजड़ित सिंहासनों पर रखते हैं। 444 पृष्ठों का यह ग्रंथ प्रकाशन की गुणवत्ता, सामग्री की श्रेष्ठता, सर्जना की प्रामाणिकता, अध्ययन की तथ्यात्मकता और भाषा की मनभावन संपदा से भरपूर है।

अपने आज तक के जीवनकाल के पिछले 60 वर्षों में उनकी कलम और उनके कदमों तथा भौतिक शरीर की खुली आंखों, खुले कानों और आंतरिक लोकचेतना से भरपूर उनके मेवाड़ीमन ने जो कुछ देखा, सुना, समझा और सहा वह सब आप इस ग्रंथ में सरलता से देख सकते हैं। छोटी-बड़ी 80 पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सैंकड़ों लेखों और देश-विदेश के अखबारों में छपी उनकी हजारों टिप्पणियों, यात्रा वर्जनों एवं अध्ययन के समय काम में आए ग्रंथों की संदर्भ सूक्तियों को पढ़ते-पढ़ते आप चकित रह जायेंगे। विस्मृत तो आप कई पृष्ठों पर होंगे ही।

जहां हवा की एक औचक लहर भी आपकी एकाग्रता तोड़ देती हो वहाँ परिवार और समाज के साथ जीवन जीते हुए साठ वर्षों तक एकाग्र होकर कलम चलाना किसी आराधना, उपासना से कम नहीं है। कहूं कि शायद तपस्या इसी को कहते होंगे।

मेवाड़ के बारे में प्रकृति पर चिढ़ते हुए एक दो सयाने मित्रों ने कहा- ''प्रकृति ने मेवाड़ के साथ पूरा न्याय नहीं किया। वहाँ खैर, खेजड़े, बबूल और बेर झाड़ियाँ तो खूब दे दीं पर चिनार, देवदार और चीड़ जैसे ऊंचे वृक्ष एवं शीशम जैसे कीमती वृक्ष नहीं दिये। जौहर की ज्वाला तो इतिहास ने दे दी पर हिमालयी शीतल बर्फ़ मेवाड़ को कुदरत ने क्यों नहीं दी?'' यह सुनते-सुनते मेरी हँसी चल गई। मैंने कहा, ''समझो तो मैं बता दूं कि मेवाड़ को जो प्रकृति ने नहीं दिया वह सब कुछ मेवाड़ के पास है। फ़र्क सिर्फ नजरों का है।'' वे प्रश्नपूर्ण दृष्टि से मुझे देखते हुए पूछ बैठे- ''कहाँ? कैसे?'' मैंने ठहाका लगाते हुए कहा-''उदयपुर जाकर डॉ. महेन्द्र भानावत नाम के साहित्यकार, लोकजीवन के तपस्वी से मिल लो। देवदार, चिनार और चीड़ की ऊँचाइयां, शीशम की मूल्यवत्ता, जौहर की ज्वाला, और हिमालयी बर्फ़ की शीतलता सब आपको एक ही व्यक्ति में मिल जाएगी। जाकर मिलो तो सही।'' उन मित्रों ने मुझे अपना प्रणाम दिया और वे चल पड़े। डॉ. महेन्द्र भानावत के ग्रन्थ 'भारतीय

लोकनाट्य' ने हमें जो समृद्धि दी है वह हमारी एक अलौकिक सम्पदा ही मानी जायेगी। -राजस्थान पत्रिका

लोकनाट्यों का ज्ञान-कोष
-डॉ. कुन्दन माली-

आमतौर पर भारतीय लोकतत्व की चेतना तथा लोकपरंपरा एवं लोक प्रचलित तमाम कलाओं के गहन अध्ययन विश्लेषण तथा अनुशीलन की दृष्टि से डॉ. महेन्द्र भानावत का नाम चिरपरिचित है। उनकी अब तक की जीवन यात्रा सिर्फ और लोककला के विभिन्न अनजाने, अनछुए एवं अपरिभाषित पक्षों के रेखांकन पर ही केंद्रित रही होने के कारण साधना के स्तर पर जा पहुंचती है।

समग्रत: इतना तो निसंदेह रूप से कहा जा सकता है कि डॉ. महेन्द्र भानावत ने न केवल भारतीय लोकनाट्य में रूचि रखने वाले जिज्ञासुवर्ग के लिए अत्यंत उपयोगी, संग्रहणीय तथा पठनीय पुस्तक प्रस्तुत की है बल्कि इस क्षेत्र में अनुसंधान करनेवालों के लिए मार्गदर्शक के रूप में भी इसका महत्व स्वयं स्पष्ट है। भारतीय लोकनाट्यों को समझने तथा विश्लेषित करने की दृष्टि से इसे भारतीय लोकनाट्य का ज्ञानकोष या रेडी रेकनर भी माना जा सकता है। इतना ही नहीं, भारत के बाहर विदेशों में भी जो लोग भारतीय लोकपरंपरा, लोकरंग, लोकसंस्कृति तथा भारतीय लोकपरिवेश को लेकर अनुसंधानपरक कार्य करना चाहें, उनके लिए भी डॉ. महेन्द्र भानावत की यह पुस्तक ठोस, प्रामाणिक, जीवंत विषयवस्तु तथा जनोन्मुख भाषा के तौर पर अपनी उपयोगिता सिद्ध करती है।

यह पुस्तक इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें लेखक अनेक भ्रांतियों का निवारण संतोषप्रद सीमा तक करता है लेकिन साथ ही साथ वह कई स्थलों पर नई बहस और विचार विमर्श के मुद्दे लेकर भी उपस्थित होता है। इस दृष्टि से यह कृति अपने मौजूदा रूप में भाषा, प्रस्तुतिकरण, चित्रावली, रेखांकन, अवबोध, पारिभाषिक जटिलताओं के निराकरण तथा सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाती है क्योंकि गवेषणात्मक होते हुए भी यह शोध की बोझिल भाषा से दूर है तथा अपने प्रतिपाद्य विषय तथा मुद्दों को सुलझाने, स्पष्ट करने के क्रम में लेखक हमेशा लोकचेतना तथा लोकदृष्टि को ही महत्वपूर्ण मानता है जो उसके दीर्घ अनुभव तथा लचीले स्वभाव का परिचायक है। - मधुमती

अनुभव का अंगरस
-डॉ. ब्रजरतन जोशी-

इस ग्रंथ की सबसे बड़ी महत्ता यह है कि यह संपूर्ण भारतीय लोकनाट्य को अपनी परिधि में रखकर उनसे जुड़ी सचित्र सामग्री, प्रस्तुतियों के चित्र, लेखक की सजीव उपस्थिति और कलाकारों की उन ऐतिहासिक छवियों को अपने कलेवर में लिए है, जिन्हें आने वाले समय में इस तरह के ग्रंथों से ही जाना पहचाना जा सकेगा। इस अर्थ में यह एक सांस्कृतिक दस्तावेज भी है क्योंकि पुस्तक में क्रमश: लोकरंग शैलियों के साथ-साथ लेखक की जीवन-यात्रा व लोककला आदि से उसके गहरे रागात्मक संबंध और परिदृश्य के सभी वर्गों, विधाओं के नेतृत्व करने वालों के साथ लेखक के जीवन संवाद का भी अभिलेख है।

एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य जो इस पुस्तक के महत्व व लेखक के सराहनीय प्रयास को प्रदर्शित करता है वह अकादमिक स्तर पर इस तरह के व्यवस्थित एवं विचारित रूप से भारतीय लोकनाट्य पर ढेर सारी सूचनात्मक, सर्वेक्षणात्मक एवं संवादात्मक का एक ही ग्रंथ में उपलब्ध होना।

लेखक ने अपने जीवन में बहुत सी यात्राएं की हैं। इसलिए जब वह प्रस्तुतियों का वर्णन करता है, तो शैली में वृतांत की सी झलक दिखती है। इस रूप में यह लोकजीवन की बहुरंगी झांकी का एकत्रीकरण भी है। यह पुस्तक इस रूप में पठनीय और संग्रहणीय है कि इसमें संभवत: पहलीबार लोकनाट्य के विविध रूपों की प्रस्तुतियों, उत्पादों, अभिनेताओं, मण्डलियों, संस्थाओं, उनसे जुड़े सृजनात्मक व्यक्तियों आदि के चित्र सहित वर्णन, संयोजन एवं समायोजन इस तरह से किया गया है कि वे अलग-अलग होते हुए भी जीवन की बहुरंगी दुनिया की एकरूपात्मक अभिव्यक्ति हो उठती है।

इस पुस्तक का परिशिष्ट भी अपनेआप में एक स्वतंत्र पुस्तक के समान ही महत्व वाला है। कठपुतली खेल, स्वांग, ख्याल आदि के प्रचलित मौखिक रूपों के अंशों की लिखित प्रस्तुति आने वाले समय में अनुसंधानोत्सुकों की राहों को आसान बनाएंगी और नई राहें भी खालेंगी। इन महत्वपूर्ण अंशों पर अनुसंधान से लोक अध्ययनों को नई दिशा व ऊर्जा मिलेगी। ऐसे लुप्त होते जा रहे, छूटते जा रहे जीवन से जीवन के इन बेहद करीबी संवेदन संसारों से हमारा नाता पुन: कायम होगा।

यह अध्ययन अपनी बनावट एवं बुनावट दोनों में ही पाठकीय मन व जनजीवन में लोक के प्रति उत्कण्ठा, जिज्ञासा एवं रागात्मक अनुभूति उत्पन्न करने में कामयाब होगा। इस तरह के अध्ययनों से आने वाले दिनों में जनपदीय अध्ययनों की महत्ता को बल व गति मिलेगी। -नटरंग

लोकसाहित्य का वेद
-डॉ. पूरन सहगल

डॉ. महेन्द्र भानावत का भारतीय लोकनाट्य ग्रंथ उनकी सुदीर्घ तपस्या का यह अमृत फल है। इस ग्रंथ की तुलना किसी पूर्व नाट्यशास्त्र से करना बेमतलब है कारण कि यह लोकनाट्य है, शास्त्रीय नाट्य नहीं। इसकी कसौटी लोक है इसलिए यह ग्रंथ अनुभूत है। अन्य ग्रंथों से परे है। कबीर की भाषा में कहूं तो यह आंखन देखी है, कागज लेखी नहीं। डॉ. भानावत कागज लेखी पर विश्वास नहीं करते। आंखन देखी पर ही भरोसा करते हैं। जो लोक में दृष्टव्य नहीं है वह उनका विषय भी नहीं है।

लोक वांग्मय- गीत, गाथा, कथा और नाट्य के चार चरणों का लोकमंगल है। चारों विभागों का विस्तार बहुत बड़ा है। इन चारों वेदों में से एक वेद डॉ. भानावत का यह ग्रंथ कहूं तो किंचित भी अतिशयोक्ति नहीं है। लोक की सीमा वहां तक है जहां तक यह कायनात है।

जिस प्रकार मधुमक्खी भांति-भांति के पुष्पों से एक-एक कण-मधुरस एकत्र कर अपने छत्ते में संचित करती है, वैसा काम लोक आराधक को करना पड़ता है। एक जाति होती है जिसे न्यारगर (हेले) कहते हैं। न्यारगर सुनार की दुकान से धूल खरीदते हैं और उसे अपनी कारीगरी से जलाकर, गलाकर और पानी के पछेंटे दे-दे कर उसमें से सोना और चांदी निकालते हैं। इसीलिए इस जाति का एक नाम धूल धोया है जो अधिक सार्थक भी है। लोकशोधक धूल धोये की तरह लोक में से साहित्य का सत्व शोधन करते हैं। वे लोक से संचित कर उसे निखारते हैं और फिर लोक को सौंप देते हैं। एक दृष्टि से वे लोक के गोताखोर ही होते हैं जो लोकरत्न देकर स्वयं लोकरत्न बन शोभित होते हैं। डॉ. भानावत का यह ग्रंथ लोकसाहित्य पर काम करने वाले शोधार्थियों के लिए आधार ग्रंथ है। पारंपरिक शब्दावली में उन्हें लोकऋषि कहना अधिक उचित होगा। इस वामन अवतारी ऋषि ने लोक का चरण-चरण नापा, समझा और व्यक्त किया है।

★भारतीय लोकनाट्य, डॉ. महेन्द्र भानावत, प्रकाशक- आर्यावर्त्त संस्कृति संस्थान, बी-216, चंदूनगर, करावल नगर रोड़, दिल्ली-110094, पृष्ठ संख्या- 444, मूल्य- 1500/- मात्र।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जिन्हें मैं जानता हूं	100/-

'लाइफमंत्रास' 4 हफ्ते से टॉप 5 में

उदयपुर। सहारा इंडिया परिवार के मैनेजिंग वर्कर एवं चेयरमैन, सुब्रत रॉय सहारा की पुस्तक 'लाइफ़ मंत्रास' निलसन के बेस्टसेलर चार्ट में लगातार 4 हफ्तों से टॉप 5 में बनी हुई है। निलसन के अनुसार बेस्टसेलर लिस्ट में पिछले हफ्ते 'लाइफ मंत्रास' चार्ट में नम्बर वन पर रही और निलसन बुक स्कैन की नॉन-फिक्शन श्रेणी में बेस्टसेलर रही।

निलसन बुक स्कैन सर्विस पुस्तक विक्रय ट्रैकिंग सर्विस है और इंडिया, यूके, आयरलैंड, आस्ट्रेलिया, यूएस, साउथ अफ्रीका, न्यूजीलैंड, इटली, ब्राजील और स्पेन में कार्यरत है व टोटल ट्रांजिक्शन डेटा को टिल्स एवं डिस्पैच सिस्टम्स के आधार पर सभी प्रमुख बुक रिटेलर्स के द्वारा कलेक्ट करती है। इनमें बुकअड्डा, क्रॉसवर्डस, कनेक्शन, डीसी बुक्स, फ्लिपकार्ट, इंडिया टाइम्स, इंफिबीम, लैंडमार्क, लैंडमार्केटल, कैपिटल बुक डिपोट, रैडिफ़ उड़ीसी, पेजटर्नर्स, टीवी18 होम शॉपिंग, डब्ल्यूएच स्मिथ इंडिया, ईबे, महिन्द्रा रिटेल, रिलायंस टाइम आउट, स्नैपडील आदि द्वारा ऑनलाइन एवं ऑफलाइन डेटा कलेक्ट करती है।

लांच के एक माह के भीतर ही 'लाइफ़ मंत्रास' पुस्तक चार्ट में ऊपर चढ़कर बेस्टसेलर का खिताब हासिल कर चुकी है। लेखक सुब्रत रॉय सहारा ने विस्तारपूर्वक जीवन के मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक विविध पहलुओं को उजागर किया है।

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 1 अप्रेल 2016

महाबली काछबली

मेवाड़ की धरती जूझ की, संघर्ष की, अपराजेय धरती है। इसीलिए एकजुटता, सौहार्द और भाईचारे की धरती भी है। तमाशा देखती रहती है लेकिन तोला माशा भी उसका हिस्सा नहीं बनती। यह सब देश दुनियां को दिखा दिया है, काछबली के तालठोक वासिंदों ने शराब के ठेके बंद कराने के अभियान को जार-जार, तार-तार कर। इस अभियान में महिला शक्ति का सशक्तीकरण जिंदाबाद रहा। जय-विजय के घोष की उनकी मशाल सदैव के लिए प्रज्वलित हो गई। 'शब्द रंजन' की उनको बधाई और महाबली काछबली का जय घोष।

काछबली राजसमंद जिले के भीम की पंचायत है। वही राजसमंद जहां हल्दीघाटी है। वही हल्दीघाटी जहां महिला सैनिकों ने छिपे रूप में अपना कमाल दिखाया। उन सैनिकों में अधिकांश नव परिणिताएं थीं जिनका हल्दी-पीठी का शरीर था। उनके उत्सर्ग ने ही उस युद्ध-घाटी को हल्दीघाटी नाम से रोशन किया। हमारे यहां का इतिहास बहुत सारा अबोला है। उसके गुप्त पन्नों में लिखी दास्तान खोजनी बाकी है। लोकतंत्र में, तंत्र कितना भी ता-तू करे, विजीत लोक ही होता है। ठेके के खिलाफ कुल 67.11 प्रतिशत वोट पड़े। कुल नौ वार्ड वाली पंचायत में 2886 मतदाता हैं। वोट डाले 2039 लोगों ने। इनमें से पुरूष 810 थे जबकि महिला वोटर की संख्या 1229 रही।

ठेके बंद कराने में सबसे आगे महिलाएं थीं जो लंबे समय से संघर्ष कर रही थीं। उनके संघर्ष की धार चमकती गई। यह भी सच है कि शराब का सर्वाधिक दंश महिलाएं ही भोगती हैं। महिलाओं ने मिलकर धरा-अम्बर तक को हिला दिया। सबक भी पिला दिया। रोशनी का दीपक भी जला दिया जिसका प्रकाश पूरे प्रदेश-देश-देशांतर में हवा को रोशनी देगा।

महिलाएं कह रही थीं, धनभाग तो हमारा यह भी है कि हमारी कलेक्टर भी महिला हैं। वे सरकारी भले ही हों पर उनमें भी एक महिला का सशक्त दिल है जो हमारे लिए असरकारी रहा। गरम जोर का रहा चना, उनकी भी करें अर्चना। फिर प्रदेश की नकेल भी सुपर महिला ने संभाल रखी है। इन सबके साथ रंग होली का भी तो सबकी रग-रग में रम-जम गया। राज राजे का, बजता रहे बाजे का।

विख अमरत तो कुण पियौ, पिउ पियै दारूह

-प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़-

कंथ कमावै मोकळौ, कलाळां सारूह
घर रा सह ग्यारस करां, पिउ पियै दारूह

भावार्थ : निस्संदेह मेरे पति कमाते तो बहुत हैं, किन्तु वह सारी कमाई केवल अपने मौज.मजे में ही चली जाती है। घर के हम सब भले भूखे मरते रहें, लेकिन वह तो शराब पीते ही पीते हैं।

उडकूं आधी रात तंइ, वळै न वै बारूंह
दहु रा दहु भूका सुआं, पिउ पियै दारूह

भावार्थ : आए दिन आधी रात पर्यन्त टकटकी लगा उनकी बाट जोहती रहती हूं, किन्तु वह पियक्कड़ कहां लौटते हैं और यों मैं थकी मांदी भूखी पड़ी रहती हूं। उधर वह भी पता नहीं कब आकर नशे में बिना खाये ही सो जाते हैं।

किण घर जा सुख सांस लूं, कुण जा पुकारूंह
पीहरिये बाबल पियै, (अठै) पिउ पियै दारूह

भावार्थ : कहां जा कर चैन की सांस लूं और किसे अपनी व्यथा कथा सुनाऊं? कम्बख्त वहां पीहर में पिताजी अनाप-शनाप पीते हैं और यहां यह।

म्हां जसड़ी धण मोकळी, म्हां जसड़ा मारूह
सै सामल आंसू पियां, पिउ पियै दारूह

भावार्थ : मेरे जैसी अनगिन औरतें हैं और उन जैसे कई एक आदमी। जब हम समदुखिनी एक दूसरे के आंसू बांट रही होती हैं तब ही उधर वह हमप्यालों के साथ पी रहे होते हैं।

घर ग्रस्ती री नाव या, लागै किम पारूह
प्याला री पतवार लै, पिउ पियै दारूह

भावार्थ : घर-गृहस्थी की यह नाव कैसे पार लगे जब खिवैया के हाथों ही जिम्मेदारियों की पतवार के बजाय प्याला हो।

बिन पत फळण्या रूंखड़ा, (थारो) फळणों धिक्कारूंह
बिन पत म्हारो घर करो, पिउ पियै दारूह

भावार्थ : हे बिना पत्तों के पुष्पित होने वाले महुए! तुम्हारे ऐसे फलने-फूलने को धिक्कार है क्योंकि तुम्हारी इस कम्बख्त शराब ने अपने बिनपत्तों के नग्न स्वरूप जैसा ही मेरे घर को भी उजाड़ कर रख दिया है।

क्यूं प्रभु थैं समदर मथ्यौ, मो घर दुख सारूह
विख अमरत तो कुण पियौ, पिउ पियै दारूह

भावार्थ : हे प्रभु ! आपका समुद्र मथना मेरे लिए तो अभिशाप ही बना है क्योंकि उससे निकले विष और अमृत तो पीने वालों ने पिये किन्तु मेरे हिस्से में तो शराब का दु:ख ही पल्ले पड़ा है।

-पिउ *पियै दारूह* से साभार

पत्र-पिटारी

साहित्य में स्वाद बढ़ाने वाली रचनाएं

शब्दरंजन नाम बहुत अच्छा रखा यार। सभी रचनाएं साहित्य में स्वाद बढ़ाने वाली हैं। महेन्द्र सन् 1961-62 में मेरा शिष्य रहा। कान्यो मान्यो मुझे सर्वाधिक अच्छा लगा।

-डॉ. हरीश

ऐसी पत्रिका की आश्यकता थी ही। मणि मधुकर व अन्य दो विद्वानों पर डॉ. महेन्द्रजी भानावत ने जो लिखा उससे कहीं अधिक तो वे स्वयं महान हैं। वे लोकसाहित्य के मर्मज्ञ विद्वान तो हैं ही परन्तु उससे भी अधिक वे भाषाजन हैं। मैं इस समय 94 वर्ष का वृद्ध हूं तथा रेटाना के नेत्र रोग से पीड़ित हूं फिर भी जैसे तैसे पत्र लिखने का प्रयास किया है।

-भूपतिराम साकरिया

एक फरवरी के अंक में बालकवि बैरागीजी का कवि सम्मेलन से जुड़ा विचार-मंथन बेलाग सत्य है। मैं भी इस दौर से गुजर चुका हूं। धारावाहिक 'स्मृतियों के शिखर' की बात ही कुछ और है। यह डॉ. महेन्द्र भानावत की लेखनी का एक दस्तावेज बनेगा। पत्रिका के दीर्घायु चलने की कामना करता हूं।

-स्वामी खुशालनाथ 'धीर'

सचिन ने पेश किया टी-फोन

उदयपुर। प्रथम वास्तविक ग्लोबल आइओटी ब्रांड स्मार्ट्रन ने अपनी पहली उत्पाद रेंज पेश की है। कंपनी के उत्पाद भारत और विश्व के लिए भारत में 'इंजीनियरिंग एवं डिजाइन किये गये' हैं। नए पेश उत्पादों में टी.बुक-एक प्रभावशाली हाई परफॉर्मेंस अल्ट्राबुक कन्वर्टेबल, टी.फोन सबसे हल्का 5.5' स्मार्टफोन, और ट्रन.एक्स -कंपनी का खास स्मार्ट्रन अनुभव शामिल है। इस अवसर पर स्मार्ट्रन के ब्रांड एंबेसेडर और शेयरहोल्डर महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने कंपनी के संस्थापक एवं चेयरमेन महेश लिंगारेड्डी के साथ इन उपकरणों, प्लेटफॉर्म्स और सेवाओं को प्रस्तुत किया। इस दौरान कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर नरसी रेड्डी, स्मार्ट्रन के सह-संस्थापक एवं प्रेसिडेंट रोहित राठी और कंपनी के ग्लोबल पार्टनर्स ग्राहकों एवं वेंडर्स की भी उपस्थिति रही।

नाम अनाम सलाम

(1)
वीरको जय वीरांगनाका सलाम लिखो
खत एक भारत मां के नाम लिखो।
(2)
वतनवास्ते फांसी चढ़गये काला पानी
जीवन उनका अनाम लिखो।
(3)
बेटा-भाई-पिता-पति वतनको दिया
उन्हें नतमस्तक प्रणाम लिखो।
(4)
सीमा पर पहरा दुश्मन से जो लोहा
लेता उन्हें सच्चा नवाब लिखो।
(5)
जनगणमन, वन्देमातरम् और जयहिंद
ऐसे दुलारों को बारम्बार सलाम लिखो।

-दयाराम ढिल 'दिलेर'

खुल्लमखुल्ला के रंग से

होली अंक (5) में होली पर मुजरोपरक रंग वर्षा में नामीघरामी हस्तियों के बीच मुझ पर भी दोहा रंग दिया जिससे मेरा होलिकानंद द्विगुणित मजेदार हो गया। यह मजा और अधिक शतरंगी बना जब आप दोनों पिता-पुत्र पर मेरी खुल्लमखुल्ला कलमबंदी हुई। लीजिए आप भी इसका मजा-

(1)
महेन्द्रजी भानावत हैं शहर के,
जानेमाने साहित्यकार।
उनकी कलम से खनकती है,
सात सुरों की झंकार।।
सैंकड़ों पुस्तकें अब तक लिखदीं,
सजा दिया दरबार।
अब उससे भी आगे बढ़,
निकाला पाक्षिक अखबार।।
शब्द में भी रंजन का राग,
भानावतजी ने पिरोया।
सारे शहर के पाठकों को,
शब्द रंजन ने भिगोया।।
भानावतजी आपको देखकर,
एक बात जरूर सताती।
सच बताओ इस उम्र में भी,
यह ऊर्जा कहां से आती।।
(2)
डॉ. तुक्तक भानावत की बात करें,
तो बात ही निराली।
कोई चलता पात-पात तो,
वो चलते डाली-डाली।।
जारोदय का तो जवाब नहीं,
सब पढ़कर हो गये मस्त।
लेकिन उसके बाद क्या हुआ,
सब हो गये अस्त व्यस्त।।
कोई इधर गया, कोई उधर गया,
तो कोई हो गया जाम।
चलो इसी बहाने भागदौड़ से,
कुछ मिल गया आराम।।
खट्टा मीठा कुछ स्वाद चखा था,
जारोदय की घुट्टी में।
अब न खट्टा है न मीठा है,
डॉ. तुक्तक की मुट्ठी में।।

-भूपेन्द्रकुमार चौबीसा,
उर्फ खुल्लमखुल्ला

धीरासेन का निधन

मरुधरा की विरह माधुरी धीरासेन का 21 मार्च को निधन हो गया। रूंधे गले से हरिराम पूनिया ने सूचना दी। उनके नहीं रहने पर किसी पत्र का कोई पन्ना, कोई आखर अश्रु विगलित नहीं हुआ। कभी धूम मचाई थी संगीत समारोहों में, सौ से अधिक मारवाड़ी रिकार्डों में, सिनेमा गीतों में, गजलों में, भजनों में, मुंबई की मरफी मेट्रो संगीत प्रतियोगिता में नौशाद, सी रामचंद्र, रोशन, मनमोहन जैसे संगीत विशारदों द्वारा प्रखरता से परखी जाने वाली धीरासेन धन्य हो गई थी।

धन्य वह तब भी हुई थी जब लखनऊ आकाशवाणी केन्द्र पर बेगम अख्तर का वरदहस्त मिला इस कथन के साथ- 'तुम्हारे गले में एक प्यास है, बेटी

तुम उस प्यास को बनाये रखना।' भाग तब भी जगे थे जब लताजी नवकेतन की फिल्म 'अंधियारा' में संगीत देने स्टूडियो आई। तब इस बाला को एक छोटे से टेबल पर बिठा कहा-'एकदम चुपचाप बैठी रहना। तनिक भी हिलना-डुलना मत।' यह सब हुआ उस्ताद अली अकबर खां के कृपा-प्रसाद से जिनसे धीरासेन ने अपने जन्मस्थान जोधपुर में संगीत शिक्षा ग्रहण की।

धीरासेन से मेरा मिलना नहीं हुआ किंतु जुलाई 1958 में जब मैंने भारतीय लोककला मंडल का शोध विभाग संभाला तब रेकार्डिंग मशीन पर एक टेप में धीरासेन के गाये राजस्थानी लोकगीत सुन ऐसा विभोर हुआ कि जब-तब भी विश्राम पाता, टेप चला अभिभूत हुआ मिलता। उनके गाये रुत आई रे पपीहा, छप्पर पुराणो, टीडुआ, काळो जी काळो गीत जब भी सुनता आंखों को भीगना ही पड़ता। एक टीस, एक वेदना, एक कशिश, एक कसक, विरह की विमलता, विह्वलता और विदग्धता छन-छन कर उनके स्वरों में सुरमयी बन पूरे शरीर को संपड़ा देती।

जोधपुर से प्रकाशित दैनिक जलते दीप में मैंने अपने राजस्थानी स्तंभ में 17 नवंबर 1976 को धीरासेन पर लिखा था तब विद्याभवन के संगीत शिक्षक रामलाल माथुर ने बताया था कि धीरासेन के दादा बंगाली परिवार के थे जो जोधपुर आ बसे। यहीं धीरासेन का जन्म हुआ। उन्होंने बचपन में धीरासेन को राजस्थानी लोकगीतों से न केवल परिचय कराया बल्कि उनके सुर-स्वर को भी कंठासीन कराया। सन् 1957 में उदयपुर के मोहता पार्क में लोकसंगीत समारोह में धीरासेन के गूंजे लोकगीत आज भी वहां की हवा में गूंज रहे हैं। महिला मंडल की रजत जयंती पर धीरासेन ने जब मीरां का भजन गाया तब उपराष्ट्रपति जत्ती के पांव के अंगूठे की ताल-दीवानी के साथ पूरा दर्शक समुदाय भी दरदे दीवाना हो गया था।

लेकिन पिछले तीन-चार दशक से मैं धीरासेन को उडीक रहा। पूनियाजी से कहा भी कि क्या हो गया था उस विरह कंठी को, क्यों ओझल हो गई वह स्वयं ही। दूसरा कोई क्यों किसी की खोज खबर लेगा जब खुद स्वयं को ही अपनी खोज खबर के लाले पड़ जाय।

-म.भा.

चोरडिया उपाध्यक्ष, टीनू सचिव बने

उदयपुर। फील्ड क्लब के विभिन्न प्रबंधन पदों पर हुए द्विवार्षिक चुनाव में उपाध्यक्ष पद पर त्रिकोणीय मुकाबले में राकेश चोरडिया ने जसनीतसिंह पाहवा को पराजित कर उपाध्यक्ष का पद हासिल किया जबकि सचिव पद पर सीधे मुकाबले में टीनू माण्डावत ने मनीष नलवाया को पराजित कर दिया। ट्रेजरार पद पर सीए दिनेशचंद्र अग्रवाल विजयी रहे।

नतीजों की औपचारिक घोषणा चुनाव अधिकारी सीएम कच्छावा ने की। उन्होंने बताया कि उपाध्यक्ष पद पर राकेश चोरडिया ने जसनीतसिंह पाहवा (सोनू) को 182 वोटों से शिकस्त दी। चोरडिया को कुल 824, पाहवा को 647 तथा तीसरे स्थान पर रहे सुरेश सिसोदिया को 228 वोट मिले। सचिव पद पर टीनू माण्डावत ने मनीष नलवाया को 339 वोटों से मात दी। माण्डावत को 1024 वोट मिले जबकि नलवाया को 685 वोट मिले। ट्रेजरार पद पर सीए दिनेशचंद्र अग्रवाल ने अनीश धींग को 91 वोटों से हराया। अग्रवाल को 838 वोट मिले जबकि धींग को 747 वोट मिले। एक्जीक्यूटिव कमेटी पद पर कुल 9 प्रत्याशी थे जिनमें से 7 ने जीत हासिल की। इनमें अभिज्योतसिंह होडा (1352 वोट), गौरव भंडारी (1383 वोट), इंद्रजीतसिंह गोल्डी (1386 वोट), जिम्मी छाबड़ा (1366 वोट), ललित चोरडिया (1233 वोट), रूपेन्द्र मोदी (1432 वोट), सोहेल अख्तर (1194 वोट) शामिल है। इसके अलावा कांतिलाल पुनमिया (901 वोट), करूण त्रिपाठी (1117 वोट) चुनाव हार गए।

इस अवसर पर टीनू माण्डावत ने कहा कि परजिनों, मित्रों तथा क्लब के सदस्यों के आशीर्वाद से ही जीत मिली है। हम फील्ड क्लब को स्पोर्ट्स क्लब बनाने के लिए कटिबद्ध हैं। राकेश चोरडिया ने कहा कि क्लब की कमेटियों के कुछ काम बाकी रह गए हैं, उन्हें पूरा करना सबसे पहला मकसद रहेगा।

गुरु बिना गेला है चेला

सत्गुरु बिना हमारे कर्मबंधन नहीं कट सकते। सत्गुरु तारणहार है। वह अन्त:करण पलटता है। त्रिगुण ताप हरता है। वह हमारा सच्चा नेवड़िया है। विकृतियों, विसंगतियों और विषमताओं को जड़मूल से उखाड़ने वाला है।

सत्गुरु की संगत से शिष्य का अन्त:करण रंगा जाता है। सांसारिक रंग के स्थान पर चेतन का, सत का स्थायी रंग चढ़ने लगता है। एक भजन में कहा गया है- गुरु बिन ग्यान कांसै पाऊं चेला गेला, सरासर अकेला। सच है गुरु कामधेनु, कल्पवृक्ष, पारस पत्थर, चिन्तामणि है। उसके प्रति श्रद्धा, विश्वास, समर्पण हमें वीतरागी तथा मोक्षमार्गी बना देता है।

सत्गुरु वचन, शब्द, मूल, नाका तथा प्राण की ओळखाण कराने वाला है। स्मरण करना है कि हमारे लिए वचन, शब्द, अक्षर ही सर्वोपरि है। जो बोलता है वह हमारे भीतर बिराजित है। कहा भी है- बोले सो आप और नहीं दूजा, रोम-रोम में वासा। यह अक्षर आत्म हमारे क्षार-शरीर में निवास करता है। अपने अहंकार के कारण हम उस अक्षर को अनुभूत नहीं कर सकते। सच्चा गुरु ही हमें उस वचन-अक्षर की अनुभूति करा सकता है। एक बूंद का सकल पसारा अर्थात् उससे हमारी उत्पत्ति का राज बताने वाला अक्षर बूंद सत्गुरु ही है।

सच तो यह है कि बूंद से ही पोण्ड बनता है जो निराकार है। उसी से आकार निर्मित होता है। इस प्रकार प्राण, वचन, अक्षर, शब्द स्वयं चेतन है जिसके हम अंश हैं। ठीक ही कहा-

सबद-सबद सबहि कहे, पर सबद विदेह।
जिह्वा पर आवे नहीं,निरख परख ने देख।।

-रंगलाल धाकड़

महावीर युवा मंच का यादगार कवि सम्मेलन

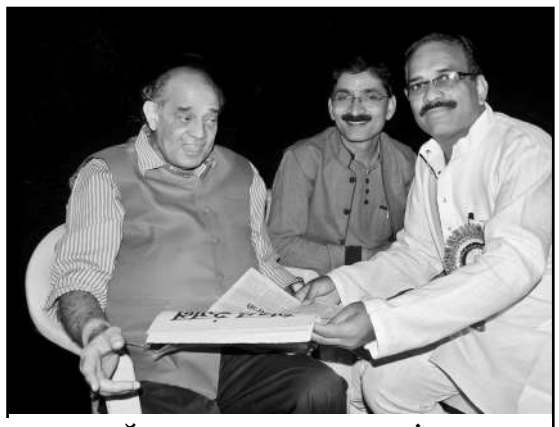

डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा शब्द रंजन का होली अंक देख विस्मित होते डॉ. हरिओम पंवार

उदयपुर। महावीर युवा मंच द्वारा तेरहवें अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन, रसवर्षा-2016 का आयोजन भारतीय लोककला मण्डल के मुक्ताकाशी मंच पर यादगार दे गया। इसमें डॉ. हरिओम पंवार, जॉनी वैरागी, नवनीत हुल्लड़, भगवान मकरन्द, शिखा श्रीवास्तव, कुमार संभव, सौरभ चातक एवं गौरव गोलछा ने अपनी ओजस्वी तथा हास्यरसी कविताओं से जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कवि सम्मेलन में प्रबुद्ध लेखक, समाजरत्न कृष्णकान्त कर्णावट की स्मृति में नाथद्वारा की शालु सांखला को तृतीय स्मृति सुप्रज्ञ सम्मान-2016 प्रदान किया गया। इस अवसर पर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले महावीर जैन, पवन चौधरी, राजेश जैन, संजय डूंगरवाल, संजय संचेती, तन्सुखलाल चोर्डिया, दिलीप पामेचा, दिनेश बापना, अजय लोढ़ा, सुनील चौधरी, जितेश नागौरी को युवा गौरव तथा समाज विभूषण किरणमल सावनसुखा को समाज गौरव से अलंकृत किया गया। सम्मेलन में शिक्षाविद् सुशीला-धर्मचंद नागौरी का अभिनंदन कर उनके सुपुत्र लेफ्टिनेन्ट शहीद अभिनव की प्रथम वर्षी पर भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।

कवि सम्मेलन के मुख्य स्वर इस प्रकार रहे-

झोपड़ियों की पीड़ा को जो भी दरबार नहीं सुनता।
लाल किला भी उसका भाषण बार-बार नहीं सुनता ।।

-डॉ. हरिओम पंवार

मुझे इस बात का गम है कि मेरा नाम बम है।
मैं हर बार यूं ही छला गया हूं।
बिस्मिल के हाथ से निकला
और हिजबुल के हाथ चला गया हूं।।

-जॉनी वैरागी

मैने एक नेताजी से पूछा-
आप दिन रात देश को खाते हो,
फिर भी खुद को गांधीवादी बताते हो।
नेताजी बोले,
देखिये जी हम तो शुरू से ही
गांधीजी के सिद्धान्तों पर चल रहे हैं,
उन्होंने कहा चरखा चलाना, सो हम चर-खा-चला रहे हैं,
देश को चर रहे हैं, खा रहे हैं, और चला रहे हैं।।

-नवनीत हुल्लड़

वादा कर तो लेते हो
मोहब्बत है हमसे बहुत, जताना भूल जाते हो।
सुना है, तुम हथेली पर हमारा नाम लिखते हो।
मगर जब भी मिलते हो बताना भूल जाते हो।

-कुमार संभव

प्रारंभ में महावीर युवा मंच के मुख्य संरक्षक प्रमोद सामर, अध्यक्ष अशोक लोढ़ा, महामंत्री मुकेश हिंगड़, संयोजक भगवती सुराणा तथा सह संयोजक पार्थ कर्णावट ने अतिथियों का स्वागत किया। अतिथि के रूप में सर्वश्री महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, समाजसेवी लक्ष्मणसिंह कर्णावट, गजेन्द्र भंसाली एवं गणेश डागलिया प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

महावीर युवा मंच की कार्यकारिणी

उदयपुर। महावीर युवा मंच के नवनिर्वाचित अध्यक्ष मुकेश हिंगड़ ने अपनी कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए उपाध्यक्ष संजय नागौरी, भंवर पोरवाल, मनोज मुणेत तथा राजेश जैन, महामंत्री नेमी जैन, मंत्री नरेन्द्र जैन, अजय मेहता, सुनील पगारिया तथा स्नेहदीप भाणावत, संगठन मंत्री दिलीप मोगरा, कोशाध्यक्ष ओमप्रकाश पोरवाल, प्रचार-प्रसार मंत्री हर्षमित्र सरूपरिया, कार्यालय प्रभारी कमल कावडिया, प्रवक्ता डॉ. तुक्तक भानावत को मनोनीत किया है।

इसी प्रकार महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष पद पर मंजुला सिंघवी, महामंत्री प्रमिला एस पोरवाल तथा प्रभारी लता कर्णावट, एवं विक्रम भंडारी, जीवनसिंह पोरवाल, रमेश सिंघवी, जयेश चंपावत तथा बसंत खिमावत को सदस्य मनोनीत किया।

पीआईएमएस में नवजात को मिला जीवनदान

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों व नर्सिंगकर्मियों ने एक नवजात शिशु को नया जीवनदान दिया है। पीआईएमएस के वाइस चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि आईवीएफ तकनीक से जिन दो बच्चों का जन्म हुआ उनमें से एक की मृत्यु हो गई जबकि दूसरा प्री मेच्योर था। उसके फेंफड़े कमजोर थे जिसके कारण उसे सांस लेने में भी कठिनाई हो रही थी। यह नवजात सात दिन का था। उसका वजन 740 ग्राम था। शिशुरोग विभागाध्यक्ष डॉ. ए.पी. गुप्ता ने बताया कि नवजात के परिजन उसे लेकर चिकित्सालय पहुंचे जहां उसे तत्काल वेंटीलेटर पर रखा गया और अच्छे से अच्छा इलाज सुलभ कराया गया। वह क्रमश: अच्छा हो गया और उसका वजन 740 ग्राम से बढ़कर 1.4 किलो हो गया। इस नवजात को 51 दिन तक डॉ. विवेक परासर तथा अन्य डॉक्टर्स व नर्सिंगकर्मियों के सुयोग्य निर्देशन में रखा गया जिससे नवजात पूर्णत: स्वस्थ हो गया।

सूक्ष्मकला सामग्री प्रदर्शनी ने मन मोहा

उदयपुर। राजस्थान दिवस पर सूचना केन्द्र में मिनिएचर आर्टिस्ट चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा ने राजस्थान महिमा, विकास और उदयपुर से संबंधित सूक्ष्म पुस्तिकाओं और राजस्थान इतिहास सहित प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के मानचित्रों और उनकी ख़ासियतों आदि के बारे में साहित्य प्रदर्शित किया। चित्तौड़ा ने राजस्थान दिवस पर एक सूक्ष्म पुस्तिका 'आधारभूत ढांचे के साथ सँवरता राजस्थान' भी प्रदर्शित की। दो गुणा दो इंच की इस सूक्ष्म पुस्तिका का विमोचन जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अविचल चतुर्वेदी ने किया और इसे अत्यन्त सुन्दर तथा रचनात्मक कृति बताया। समाजसेवी दिनेश भट्ट, जिला पर्यटन सहकारी समिति के अध्यक्ष प्रमोद सामर, अतिरिक्त जिला कलक्टर ओ.पी. बुनकर, नेहरू युवा केन्द्र के समन्वयक पवनकुमार अमरावत, इकबाल सक्का सहित कई गणमान्य नागरिकों ने प्रदर्शनी को देखा तथा सराहा।

शाही ठाठ से निकलती...

(पृष्ठ एक का शेष)

मांगीलाल ने बताया कि गणगौर में आस्था रखने वाले व्यक्ति और समाज नई गणगौर बनवाने के साथ-साथ पुरानी को भी नया रूप दिलाते हैं। मांगीलाल के बने गणगौर ईसर विदेश के संग्रहालयों में भी प्रदर्शित हैं।

गणगौर का अपहरण :

राजस्थान में पहले अलग-अलग रियासतें और ठिकाने थे। अपने राज्य के विस्तार के लिए ठिकानेदार आपस में एक-दूसरे से ईर्ष्या, द्वन्द्व और मनमुटाव रखते थे। किसी बात को लेकर जब कोई जागीरदार किसी से नाराज हो जाता तो अपना गुस्सा उस ठिकाने की गणगौर का अपहरण कर शांत करता और अपने शौर्य का प्रदर्शन करता। मेवाड़ के ठिकानों और जागीरदारों ने भी गणगौर के अवसर का लाभ उठाते हुए अन्य ठिकानों में मनाये जा रहे गणगौर उत्सव में दखल देते हुए भरे दरबार से वहां की गणगौर को उठा लाकर न केवल बहादुरी का परिचय दिया अपितु अपने ठिकाने का नाम भी जगजाहिर किया।

उदयपुर का बेदला ठिकाना प्रथम श्रेणी का ठिकाना रहा है। लगभग 400 वर्ष पूर्व यहां के राव सरदार भाले की नोक पर जो गणगौर उठा लाए उसके हाथ नहीं है। केवल धड़ रूप में यह गणगौर यहां के ठिकाने में देखी गई। ऐसी ही एक गणगौर गोगुन्दा का लालसिंह झाला मेवाड़ महाराणा सज्जनसिंह की चुनौती स्वीकार कर कोटा दरबार की गणगौर उड़ा लाया। कोटा दरबार जब मजलिस का आनंद ले रहे थे तब बाहर से लालसिंह ने कहलवाया कि घोड़े पर गणगौर नचाने वाला आया है, यदि दरबार का आदेश हो जाये तो वह अपना करिश्मा दिखा सकता है। इस पर दरबार ने इजाजत दे दी। लालसिंह ने दरबार की गणगौर उठाकर घोड़े पर रखी और धीरे-धीरे उसे घुमाते हुए चाल तेज की और देखते-देखते घोड़ा छलांग मारते हुए वहां से उछला और पलभर में जादू की तरह गायब हो गया। उदयपुर लाकर जब महाराणा को गणगौर नजर की तो महाराणा ने उसकी तारिफ करते हुए प्रतिवर्ष गोगुन्दा में गणगोर मेले की इजाजत दी। तब से प्रतिवर्ष वहां गणगौर का मेला भरता आ रहा है। ऐसी ही एक गणगौर मेवाड़ के भीण्डर नामक ठिकाने वाले गुजरात के अहमदाबाद से उठाकर लाए।

ढड्ढ़ों की गणगौर :

बीकानेर में ढड्ढ़ों की गणगौर अन्य गणगौरों से भिन्न अनूठी गणगौर है। वहां ढड्ढ़ों के चौक में, ढड्ढ़ों की हवेली की यह गणगौर चौक में ही दर्शनार्थ रखी जाती है। दो दिन तक यहां मेला भरता है जिसमें गणगौर माता से सम्मुख महिलाएं घूमर लेती हैं। मेले को बैठी गणगौर का मेला कहते हैं कारण कि इस गणगौर की कोई सवारी अथवा जुलूस नहीं निकाला जाता। इस गणगौर के पूरे पांव होते हैं जो अन्य किसी गणगौर के देखने को नहीं मिलेंगे।

प्रसिद्धि है कि लगभग 150 वर्ष पूर्व बीकानेर के सेठ उदयमल ढड्ढ़ा द्वारा यह गणगौर प्रारंभ की गई थी। जब उनके कोई संतान नहीं हुई तो उन्होंने मनौती ली कि यदि उनके लड़का हो गया तो वे गणगौर माता की पूजा प्रारंभ करेंगे। यह मनौती फलीभूत हुई और चैत्र शुक्ला तृतीया को गणगौर के दिन ही उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम चांदमल रखा गया। इस गणगौर के साथ पुत्र के रूप में भाइया की भी पूजा प्रारंभ हुई।

लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि सेठ उदयमल की यह गणगौर नख से सिर तक सोने, हीरे, पन्ने, माणक,मोती जैसे कीमती जवाहरात से जड़ी हुई है। आभूषणों में सोने के जड़ाऊ बोर, मोती लगा टीका, बोर के नीचे खांचा जोड़ी, नाक में हीरे की मोती जड़ाऊ नथ, गले में हीरा पन्ना माणक मोती वाला कठसरी गलपटिया, टेवटा, चंदन हार, हाथ में मोतियों की बंगड़ी, गजरे, चूड़ियां और मटरिया, अंगुलियों में छल्ला तथा बींटा, कमर में जड़ाऊ कन्दोरे, पांव में बारह गहनों का सेट। इसी तरह भाइया के आभूषणों में मोतियों की टोपी, कानों में ऊपर भंवरिये तथा नीचे मोती लगे लोंग, गले में पन्ना का कंठा, हाथों तथा पांवों में कड़े शोभित हैं। इनकी कीमत ही लगभग 40 करोड़ की आंकी जाती है। यह गणगौर पुलिस के कड़े पहरे में प्रदर्शित की जाती है।

उल्लेखनीय है कि सेठ उदयमल तत्कालीन बीकानेर महाराजा से घनिष्ट रूप में जुड़े हुए थे। महाराजा गंगासिंह उन्हें काकाजी कहते थे। यही कारण है कि उन्होंने उदयमल को ऐसी सर्वाधिक कीमती गणगौर निकालने की स्वीकृति प्रदान की। राजस्थान के किसी राजपरिवार और ठिकाने में ऐसी बेशकीमती गणगौर देखने को नहीं मिलेगी।

फूल-पत्तों की गणगौर :

राजस्थान में जहां राजपरिवारों और विभिन्न ठिकानों की गणगौरें बहुमूल्य हीरे जवाहरात से लकदक होती हैं। वहीं आदिवासियों तथा अन्य जातियों में ऐसी गणगौरें मिलेंगी जिनका पूरा श्रृंगार ही फूल-पत्तियों और जंगली फलों का है। ऐसी गणगौर में गरासिया जाति की गणगौर बड़ी लोकप्रिय है। इस जाति का सबसे बड़ा मेला ही गणगौर का मेला है जो वैशाख कृष्णा पंचमी को आबू रोड़ के पास सियावा गांव में भरता है। इस मेले में दूर-दूर तक के गांवों, घाटियों, पहाड़ों, फलों तथा जंगलों से झुंड के झुंड स्त्री-पुरूष नाचते-गाते उमड़ पड़ते है। यह मेला पिछले 250 वर्षों से भरता आ रहा है।

गरासिया बांस की खपच्चियों और छोटी-पतली डालियों की सहायता से गणगौर और ईसर बनाते हैं। मुंह की जगह मुंडी यानी मुखोटा लगाते हैं। ईसर को धोती-कुर्ता व फैटा पहनाया जाता है जबकि गणगौर को घाघरा,लुगड़ा, चोली पहनाई जाती है। इनको आम, नीम, महुआ, खजूर, पलाश आदि के पत्तों तथा फूलों-फलों की मालाओं से सजाया जाता है। ऐसी ही गणगौर बणजारों की विवाह योग्य युवतियां बनाती हैं। घास-फूस, फल-फूल तथा डाल-कामड़ी से दिनभर गणगौर-ईसर बनाकर उन्हें घाघरा, लुगड़ी, कांचली-अंगरखी, धोती पगड़ी तथा चांदी के विभिन्न आभूषणों से सजाती है और संध्या को अपने सिर पर लिए गाती-नाचती जुलूस निकालती है। जाहिर है, ये गणगौरें भौतिक दृष्टि से कोई कीमती नहीं रखतीं किन्तु सहज एवं सरल उत्कृष्ट कला तथा आत्मिक, धार्मिक, आध्यात्मिक भावों का उत्कर्ष लिए होती हैं।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि ऐसी गणगौरें अन्य जातियों में भी देखने को मिलती हैं। चित्तौड़ जिले के बणजारों का खेड़ा गांव में विवाहातुर बालिकाएं भी ऐसी ही घास फूस पत्ते तथा टहनियों की सहायता से बड़ी कलात्मक गणगौर और ईसर बनाती हैं। संध्या को खेत से जुलूस के रूप नाचती गाती गणगौर अपने गांव ले जाती हैं तब जो गीत गाती हैं उसकी पंक्तियां ही बड़ी मार्मिक होती हैं जिनमें कहा जाता है कि सहेलियां इस वर्ष तो हिलमिल कर मौजमस्ती से गणगौर मना लें, अगले वर्ष पता नहीं क्या संयोग बैठे कि सब साथ मिलकर यह उम्सव न मना पायें। कारण स्पष्ट है, जब विवाह सूत्र में बंध जाएंगी तो मिलना संभव नहीं होगा।

घूमर नृत्य :

राजस्थान में जयपुर, कोटा, बूंदी, जैसलमेर, उदयपुर, बीकानेर की घूमर बड़ी नामी रही है। राजपरिवारों की घूमर अपने विशिष्ट लहजे पहनावे तथा ठसक के कारण अपना अलग वैशिष्ट्य लिए होती है। इसका मुख्य वाद्य ढोल है। सहायक वाद्य के रूप में बांकिया भी बजाया जाता है।

घूमर नाचने वाली महिलाएं विविध भांति की घूमरें लेती हैं। एक प्रकार तो वह जिसमें गोलाकार घूमती हुई महिलाएं अपने हाथों से तालियां बजाती रहती हैं। दूसरा प्रकार डंडों वाली घूमर का है। इसमें नाचने वाली अपने ही हाथों के डंडे आपस में टकरात हुई नाचती हैं और दोनो ओर की पासवाली के डंडों से अपने डंडे मिलाती हुई खेलती हैं। तीसरे प्रकार की घूमर में डंडों का प्रयोग नहीं होता। नाचते समय अपने हाथों को उठाती हुई ऊंगलियों द्वारा नाना भाव व्यक्त करती हैं। इन घूमरों में अलग-अलग गीतों का प्रयोग होता है।

गणगौर पूजने वाली लड़कियां और महिलाएं घूमर नाचने के लिए घेरा बनाकर खड़ी हो जाती हैं। वे झुकती हुई, अपने हाथों से ताली बजाती हुई नृत्य करती हैं। कभी-कभी युगल रूप में एक दूसरे का कैंचीनुमा हाथ पकड़, अपने पांवों को एक दूसरे से समीप लाकर खींचे हुए हाथों से शरीर को धनुषाकार देती हुई चकरी लेती हैं और सम पर पुन: पूर्व स्थिति ग्रहण करती हैं। घूमर का कोई सा प्रकार हो, गोलाकार घूमना जरूरी होता है।

कवि पद्माकर द्वारा गणगौर दर्शन :

राजस्थान का गणगौर का त्यौहार अन्य प्रान्तों में भी बड़ा लोकप्रिय हुआ। इसे देखने बाहर से भी कई विशिष्ट लोगों का उदयपुर आना-जाना होता रहा। महाराणा भीमसिंह के समय महाकवि पद्माकर गणगौर की सवारी देखने आये। इस सवारी का उनके दिल पर बड़ा अमिट प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप उन्होंने दो पदों की रचना की। एक पद की यह पंक्ति-'गौरन में कौनसी हमारी गणगौर है', आज भी साहित्य की अमर थाती बनी हुई है। मेवाड़ में गणगौर की तरह महिला को भी गणगौर का सम्बोधन दिया जाता है। पुरूष अपनी सहधर्मिणी को भी गाणगौर कह कर पुकारता है। इस सम्मानसूचक संबोधन से कवि पद्माकर बड़े चकित और उतने ही प्रभावित हुए इसीलिए उन्होंने उक्त पंक्ति में त्यौहार वाली गणगौर के साथ-साथ घरवाली गणगौर का अनुप्रास युक्त उल्लेख किया।

गणगौर विषयक डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित राजस्थान की गणगौर (1977) एवं गणगौर (2012) पुस्तकें प्रकाशित। गणगौर के लोकगीत, महिपाल राठौड़ (1998), गणगौर गाथा डॉ. श्रीलाल मोहता, मालचंद तिवाड़ी, (2005) तथा गणगौर गवरजा डॉ. बाबूलाल शर्मा (2011) द्वारा संपादित। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से मालवा के गणगौर लोकगीतों व कथाओं का समीपवर्ती अंचलों के साहित्य से तुलनात्मक अध्ययन विषय पर मंदसौर की श्रीमती ललिता चौहान द्वारा पीएच.डी.।

सेलीब्रिटीज ने बालों व त्वचा की देखभाल के टिप्स किये शेयर

उदयपुर। दीपिका पादुकोण के अनुसार होली एक ऐसा पर्व है, जो हमें जश्न के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त करने में सक्षम बनाता है। मेरी सबसे पुरानी यादों में शामिल हैं दोस्तों के साथ होली मनाना और एक-दूसरे पर रंगों से भरे गुब्बारे फेंकना। मैं बाहर निकलने से पहले अच्छी तरह से नारियल का तेल लगाती थी, ताकि मैं भरपूर आनंद उठा सकूं और मुझे त्वचा या बालों को नुकसान पहुंचने की चिंता न रहे। विद्या बालन ने कहा कि मैं के2 की शूटिंग कर रही हूं, इसलिये मैं होली का जश्न नहीं मनाउंगी। हांलाकि, हम सेट पर होली का कुछ धमाल कर सकते हैं। पिछले कई वर्षों से मैं होली खेलने के लिये बाहर निकलने से पहले बालों पर नारियल तेल लगाती हूं।

कृति सनोन ने कहा कि मैं ध्यान रखती हूं कि नारियल के तेल से अपने बालों की मालिश करूं। मैं होली के रंगों से होने वाले नुकसान से अपने बालों को सुरक्षित रखती हूं। होली खेलने से पहले मैं अपनी त्वचा पर भी नारियल तेल लगाती हूं।

श्रद्धा कपूर ने कहा कि इस साल अपने ओके जानू शेड्यूल से एक दिन की छुट्टी मिलेगी, इसलिए मैं अपने परिवार के साथ कुछ अच्छा समय बिताने की कोशिश करूंगी। मेरी सबसे यादगार होली श्री बच्चनजी की होली पार्टी थी, जिसमें मेरे मम्मी-पापा मुझे भी साथ ले गये थे। वह बेहद यादगार थी। मौजूदा समय में होली का मेरा पसंदीदा गाना बलम पिचकारी है।

कैनवास स्पार्क 3 की पेशकश

उदयपुर। माईक्रोमैक्स ने अपने अत्यधिक सफल स्पार्क सीरीज़ के स्मार्टफोन में कैनवास स्पार्क 3 पेश किया है, जो केवल स्नैपडील पर उपलब्ध होगा। यह लॉन्च कंपनी द्वारा भारत के स्मार्टफोन बाजार में प्रभुत्व स्थापित करने के लक्ष्य की दिशा में एक बड़ा कदम है। कैनवास स्पार्क 3 मात्र 4999 रु. के मूल्य में 7 अप्रैल दोपहर 12 बजे से केवल स्नैपडील की फ्लैश सेल में उपलब्ध होगा। स्नैपडील पर ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन 1 अप्रैल से शुरु होंगे।

माईक्रोमैक्स इन्फॉर्मेटिक्स के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर शुभाजीत सेन ने कहा कि कैनवास स्पार्क 1 एवं कैनवास स्पार्क 2 को उपभोक्ताओं ने बहुत पसंद किया। कैनवास स्पार्क 3 के लॉन्च के साथ माईक्रोमैक्स दमदार परफॉर्मेंस, बड़ी स्क्रीन, अच्छी बैटरी लाईफ और ऑप्टिमल प्रोसेसिंग पॉवर के द्वारा उपभोक्ताओं को मनोरंजन का बेहतरीन अनुभव प्रदान कर रहा है। कैनवास स्पार्क 3 में 5.5 ईंच एचडी आईपीएस स्क्रीन, 2500 एमएएच की बैटरी, 8 मेगापिक्सल ऑटो फोकस रियर कैमरा, 5 मेगापिक्सर का एफएफ फ्रंट कैमरा, 8 जीबी रोम, 1.3 गीगाहर्ट्ज़ क्वाडकोर प्रोसेसर, 1 जीबी रैम के साथ यूज़र्स को सुगम मल्टीटास्किंग अनुभव मिलेगा। यह फोन 10 क्षेत्रीय भाषाओं में प्रि-लोडेड आता है।

ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म 'काइट' लॉन्च

उदयपुर। भारत की अग्रणी ऑनलाइन ब्रोकरेज कंपनी झेरोधा ने अपने वेब-आधारित हिंदी भाषा के ट्रेडिंग पोर्टल 'काइट' को लॉन्च करने की घोषणा की। कंपनी ने सभी इक्विटी निवेश पर जीरो ब्रोकरेज का भी ऐलान किया। इसमें कोई अपफ्रंट फीस, कोई न्यूनतम वॉल्यूम, कोई विशेष नियम व शर्त, क्लाउजेज, स्ट्रिंग्स भी शामिल नहीं होंगे। निवेश की आसान संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, कंपनी ने अपना म्यूचुअल फंड बिजनेस शुरू करने की भी घोषणा की। झेरोधा के संस्थापक एवं सीईओ नितिन कामथ ने कहा कि झेरोधा की राजस्थान में एक शाखा और 4 पार्टनर सपोर्ट कार्यालय है। जयपुर, उदयपुर और श्रीगंगानगर में इसके मुख्य कार्यालय और सपोर्ट सेंटर्स हैं। भारत में शेयर बाजार में भागीदारी करने के लिए जागरुकता बहुत कम है और 35 वर्ष से कम आयु की 65 प्रतिशत भारतीय आबादी को आकर्षित करने के लिए, झेरोधा ने जीरो ब्रोकरेज, हिंदी में काइट और अपने म्यूचुअल फंड प्लेटफॉर्म सहित महत्वपूर्ण पहलों की शुरूआत की है। काइट एक मिनिमलिस्टिक वेब आधारित ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म है जोकि मोबाइल और टैबलेट को अपनाता है।

असली हीरो बनाम मधुमेह अभियान शुरु

उदयपुर। भारत में रक्त ग्लूकोज मॉनिटरिंग सिस्टम में अग्रणी रोशे डायबिटीज केयर एक अभियान असली हीरो बनाम मधुमेह चला रहा है जो मधुमेह के साथ स्वस्थ रहने पर जोर देता है। यह अभियान एक्यू चेक के नेतृत्व में चल रहा है जो रोशे डायबिटीज केयर का सक्रिय रक्त ग्लूकोज मानिटरिंग ब्रांड है।

रोशे डायबिटीक केयर के बिजनेस हेड सिद्धार्थ राय ने कहा कि असली हीरो बनाम मधुमेह अभियान उन लोगों द्वारा प्रशंसा पा रहा है जो नियमित रूप से एक्यूचेक के जरिए अपने रक्त में शर्करा की मात्रा पर सक्रिय नजर रख एक सक्रिय जीवन जी रहे हैं। यह एक राष्ट्रीय अभियान है जो प्रिंट, डिजिटल और रेडियो माध्यमों में प्रसारित किया जा रहा है। असली नायकों के वास्तविक अनुभवों के माध्यम से, एक्यूचेक देश में मधुमेह पीडित लोगों को प्रेरित करना चाहता है ताकि वे अपने मधुमेह को नियंत्रण में रखते हुए अपने जीवन को नियंत्रित कर सके।

एक्यूचेक के ब्रांड एंबेसडर, वसीम अकरम एक मधुमेह रोगी, भी सक्रिय रूप से खुद से ग्लूकोज की निगरानी के महत्व का संदेश दे रहे है।

धारा के विपरीत.....

(पृष्ठ दो का शेष)

कई नेताओं और राजदूतों के बीच एकबार दिल्ली के अणुव्रत सम्मेलन में एक महिला वक्ता की आवश्यकता पड़ी तो मोहनजी ने भागीरथी बेन का नाम सुझाया। फिर तो कई सर्वोदय सम्मेलनों, कांग्रेस कार्यकर्त्ता सम्मेलनों में भागीरथी बेन की उपस्थिति महत्वपूर्ण मानी जाने लगी। कई संस्थाओं से उनका जुड़ाव बना। बीस वर्ष तक तो सरदारशहर की नगरपालिका की सदस्य रहकर उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी। एकबार गोकुल भाई भट्ट ने एक सभा में सम्पत्ति दान करने को कहा तब कोई तैयार नहीं हुआ तब भागीरथी बेन ने अपने हाथ में पहनी सोने की चूड़ी देकर सरदारशहर की टेक बनाये रखी।''

मोहन भाई के स्नेहशील सौजन्य और अति आत्मीय व्यवहार से मैं व नंदबाबू उनकी मैत्री से बंध गये। उन्होंने एकबार शरदपूर्णिमा को अणुविभा की छतपर दुग्ध धवल सी छिटकी मिठास देती परिपक्व चांदनी में शानदार कवि गोष्ठी का आयोजन रखा। इसमें उदयपुर से नंद बाबू, मैं, किशन दाधीच, भगवतीलाल व्यास तथा कांकरोली के कमर मेवाड़ी, नरेन्द्र निर्मल एवं शेख अब्दुल हमीद मुख्यत: थे। देर रात तक हमारी गोष्ठी चलती रही और हम महाकवि सुमित्रानंदन पंत को याद करते रहे। जब शारदोत्सव की चांदनी रात में इसी तरह कालाकांकर में नौका विहार का उनमें आत्मीय आनंद उमड़ा था और 'चांदनी रात में नौका विहार' जैसी सशक्त-शाश्वत कविता को जन्म दिया था। हमारे लिए यह नौका विहार तो नहीं था किंतु नौकाबनी चांदनी (छत) की धवल कीर्ति में गगन विहारी बन काव्य-रस का मन-डोला हिंडोला तो था ही।

ऐसा ही एक कार्यक्रम मोहनजी ने जयपुर में रखा। 'फूल खिले कांटों में' पुस्तक के लोकार्पण का। इसमें मैंने, नंद बाबू और डॉ. विश्वंभर व्यास ने भाग लिया। यह कार्यक्रम मोहन भाई को अति संतुष्ट कर गया। रात्रि विश्राम हमने वहीं किया। जब कोई आयोजन आनंद का अतिरेक दे जाता है तब उसके शोभासदों में कुछ प्राप्ति का लोभ-लाभ बढ़ जाता है। हमारे मन में भी कुबुद्धि आ गई और हमने मोहन भाई को उसका संकेत दे दिया। कभी-कभी समूह की सोच अवांछित होते हुए भी रखनी पड़ती है। यह जानकर कि उसका परिणाम अपराधबोध लिए होगा। हमारे हाथों में उनके लिफाफों का बोझ भारी मन की उदासी लिए था।

मुझे वह प्रसंग याद आ गया जब श्रवण अपने कंधे पर माता-पिता को तीर्थाटन कराने उदयपुर जिले के सलूम्बर कस्बे के पास लाया और उसमें अपने ही माता-पिता से अपनी दीयाड़ी (दैनिक मजदूरी) याकि भाड़ा (किराया) मांगने की कुबुद्धि उपज आई। उस स्थल पर जो गांव बसा वह सरवण भाड़ा नाम से आज भी उस घटना का साक्षी बना हुआ है। कुछ दिनों बाद मोहन भाई ने भी उस घटना का संकेत दे ही दिया। अपने पत्र में उन्होंने लिखा-'फूल खिले कांटों में' के आयोजन में पधारकर 'फूल खिले हृदय में' का एहसास दे दिया। वैसे आप अपने पास फूल भी रखते हैं और कांटे भी। मेरे जैसे भोले प्राणी को तो शुरू से अब तक फूल ही पकड़ाये हैं पर मौका आने पर यथा प्राणी को चूभन भी भेंट करने में संकोच नहीं करते। फूल प्रोत्साहन का और कांटा सावधानी का प्रतीक है। आपके पास दोनों ही हैं।

(28 मई 1995 को लिखे पत्र से)

इस पत्र से मुझे जो वेदना हुई उसे मैं ही जान पाया। मोहनजी ने हर महत्वपूर्ण कार्य में मित्रों की राय को अहमियत दी पर कभी-कभी उन्होंने मित्रों को ठेंगा दिखाकर अपने हठीपन का परिचय भी दिया है। विपरीत परिणाम हाथ लगने पर आत्मचिंतन से अफसोस जाहिर किया है और अपने को सावचेत भी रखा है।

एकबार उदयपुर की कच्ची बस्ती के अवैध निर्माण को नगर विकास प्रन्यास ने बेरहमी से ध्वस्त कर दिया। इस पर मोहनजी का करूण दिल अनशन करने को उतावला हो गया। कोई उनका पक्षधर नहीं बना। नंद बाबू और मैंने भी स्पष्ट कह दिया कि अनशन करने का कोई तुक नहीं है। कोई साथ देने वाला नहीं है और अकेले ही हास्यास्पद बन बैठे रह जायेंगे। वे किसी के मनाये नहीं माने और अपनी हेकड़ी में बैठे रहे। अंत में जिनके खिलाफ वे अनशन में बैठे उन्हीं प्रशासनिक अधिकारी के हाथों उन्होंने अनशन तोड़ा। उनके इस रवैये से हम बड़े निराश और नाराज हुए।

बाद में मोहन भाई ने एक चिट्ठी में लिखा- ''आप जैसे मित्रों की उपलब्धि सौभाग्यशाली होती है। खरी बात, खरी समझ, खरी कसौटी और खरी राय। ऐसे खरेपन की प्राप्ति अपनेआप में धन्य होती है। आप दोनों की राय में स्थिति प्रस्तुति का निचोड़ था। मेरी आग्रहशीलता से आपको मेरे प्रति तरस था। उठाया हुआ कदम कैसे वापस लूं, इसके पीछे मेरा अस्पष्ट अहम था। मैंने एक प्रशासनिक अधिकारी के आग्रह और आश्वासन पर उपवास भंग किया, उसमें भी मेरे अहम अथवा स्वाभिमान की तुष्टि थी। सबकुछ के बावजूद भी उस राजनीतिक विवादग्रस्त झंझट से मेरी मुक्ति ठीक रही। यहां आने पर मेरे द्वारा बिना कुछ कहे उदयपुर को जाना और उस कदम को उठाने की यहां मेरी पारिवारिक जो अप्रिय स्थिति बनी, उसका भी निराकरण होगया।''

(4 जून 1996 को लिखे पत्र से)

एकबार मोहनजी ने हमारे सम्मुख उदयपुर के चार अति विशिष्ट तथा वरिष्ठजनों का अभिनंदन करने का प्रस्ताव रखा। हमने उनके इस प्रस्ताव को हास्यास्पद ही माना। कहा- ''मृत्युशैय्या पर अंतिम श्वांस लेने और अपने स्वयं के प्रति बेखबर रहनेवालों के अभिनंदन का शौक आपको स्वर्ग नहीं दे सकता। ऐसे लोगों का क्यों नहीं करते जो अभी कुछ वर्ष और कार्य करने की क्षमता रखते हैं। अच्छा तो यह हो कि आप श्मशान ही चले जांय और वहां जो भी शव आये उसका शॉल एवं श्रीफल से अभिनंदन करते रहें।''

हमारी इस बात से मोहनजी पर कोई असर नहीं पड़ा। उनकी जिद्द हम पर हावी ही रही। समारोह में हम भी सम्मिलित हुए मगर वह मोहनजी के मनोनुकूल नहीं हो पाया। जब उनसे रहा नहीं गया तो सच्चाई उगलते बोले- ''आप लोगों की राय तो सही थी पर मेरी जिद्द ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा।''

अणुव्रत उनके जीवन में रक्त की तरह घुलमिल गया था। अणुविभा में रहते वे ऐसे अनेक नेक कार्य करते रहे जिससे अणुव्रत का रथ आगे चलता रहे। अणुविभा पर कर्ज का बोझ चढ़ गया तो वे लंबी यात्रा पर निकल गये। लौटकर मुझे लिखा- ''दो माह से दक्षिण भारत की यात्रा पर था। तुलसी अणुव्रत दर्शन का बहुत बड़ा काम पूर्ण किया। अणुविभा पर बड़ा कर्ज का भार होगया तो यात्रा पर जाना पड़ा। आदत है राधा पहले नचाने की फिर नौ मन तेल इकट्ठा करने की। बिना राधा नचाये तेल मिलता भी नहीं।''

मैंने अणुव्रत के पूरे इतिहास-जीवन में दो ही ऐसे स्तंभ देखे जो नींव से भी जुड़े रहे और उस इमारत के भी कंगूरे बने। उनमें एक देवेन्द्र भाई कर्णावट थे तो दूसरे मोहन भाई जैन। मोहन भाई जब भी उदयपुर आते, मिलने का प्रयत्न जरूर करते। नहीं मिल पाते तो पत्र लिखते और खेद भी व्यक्त करते। 12 सितम्बर 2001 को लिखे पोस्टकार्ड में उनको इस दर्द ने जैसे अपराध बोध ही दे दिया। लिखा- ''पिछले दिनों मैं दो बार उदयपुर आया। थोड़ी-थोड़ी देर ठहरा। श्री बुद्धमलजी शामसुखा से कहता रहा, चलो महेन्द्रजी से मिल आयें पर संयोग नहीं बना। उदयपुर आऊं और आपसे नहीं मिलूं, यह अक्षम्य अपराध मेरे से होता रहता है। अपराध अनुभव भी करता हूं फिर भी होता रहता है। अक्षम्य के लिए क्षमा मांगूं तो भी मिलेगी नहीं। भविष्य में ऐसा अपराध न हो, इसका पूरा ध्यान रखूंगा।''

इसके बाद सन् 2008 के चातुर्मास में मोहनजी से मेरा उदयपुर से तनिक दूर महाप्रज्ञ विहार में मिलना हुआ। वे आचार्य महाप्रज्ञजी के दर्शनार्थ आये हुए थे। उनके पुत्र संचय उनके साथ थे। इस बार मोहनजी पर मैंने उम्र को लदते देखा। आंखों की रोशनी कुछ कम हो चली थी। चलना भी दूभर हुआ जा रहा था मगर वही होश, जोश, दिल्लगी, आग, राग और जाग थी। उम्र को पछांटी देते वे बोले - 'बच्चों का देश बना रहा हूं' और कई योजनाएं गिना दीं। मैं दंग, चकित रह गया। मोहनजी बुढ़ापे की कंचुली छोड़ बाल अवस्था में आगए हैं। हम कुछ देर गपियाते रहे। हमजोली करते रहे। आछी करणी पार उतरणी भजते रहे और भीगे पलों से विदा हुए।

24 अप्रेल 2014 को उनके निधन की सूचना पाकर मैं धक् रह गया। कांकरोली कमर मेवाड़ी को फोन पर सूचना दी। कमर और मोहन भाई एक मन दो प्राण थे। उनके सम्बोधन और निरंजननाथ आचार्य स्मृति से जुड़े सारे समारोह मोहन भाई अपनी देखरेख में अपनी अणुविभा में आयोजित कर आह्लादित हो फूले नहीं समाते लेकिन वे सब प्रसंग अब जैसे इतिहास के बोल होगये हैं। जयपुर जाकर मोहन भाई ने बालकों के लिए 'बच्चों का देश' नाम से मासिक पत्र प्रारंभ किया जो उनकी बेटी कल्पना जैन के संपादन में पहचान बनाये रहा किंतु एक सप्ताह भी नहीं बिता कि कल्पना का भी निधन हो गया। वे कैंसर से ग्रस्त थीं। एक स्वतंत्रता सेनानी गांधीवादी आदर्शों के प्रतीक मोहन भाई पूर्णत: जैनत्ववादी अणुव्रती थे जिन्होंने अंतिम अवस्था के पन्द्रह दिन बिना अन्न ग्रहण किये संथारा धारण किया। उनका पूरा जीवन हरिजनोत्थान, अछूतोद्धार, शराबबंदी तथा बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित रहा।

चना चौधरी, मटर गुलाम

-डॉ. मालती शर्मा-

लोकसाहित्य में अन्न सुभाषित है। पहेली है। सूक्ति, उक्ति, लोकोक्ति है। गीत है। कथा-कहानी है और कृषि-कर्म खेती, धरती पर अनेक फसलों की विविध रंगों, गंधों स्वरूपों की क्यारियों, में छंदों में लिखा जीवन के प्राण अन्न का महाकाव्य है। लोकपंरपरा में लेखन भी कृषि कर्म है। धोरी धरती पर काले बीजों से गीतों की फसल उगती है-

'धौरी धरती, कारौ बीज
बोमन हारौ गावै गीत।'

अन्न का 'कण' वजन और 'तिल' समय की गणना के मापक हैं। कण-कण जोड़े मन जुड़ता है और दिन तिल-तिल बढ़ता-घटता है। अनाजों में भी गेहूं, जौ, बाजरा, धान ये पुरूष अन्न हैं और मूंग, मसूर, मोठ, मटर, अरहर ये स्त्री अन्न हैं।

लोकपरंपरा में खाद्यान्न की शुद्धता, पवित्रता, उपयुक्तता, दो-तीन अन्नों के मेल के नामों के साथ उनके गुण, खाने की बेला, कुबेला, उसकी प्राप्ति के स्रोतों पर बड़ी सूक्ष्मता और विस्तार से विचार किया गया है। यह स्पष्ट और त्रिकालिक मत है कि मनुष्य जैसा अन्न खाता है वैसा ही उसका मन, स्वभाव होता है। कहा भी है- जैसा खावै अन्न, वैसा होवै मन।

लोकपंरपरा में प्रमुख अन्न गेहूं, जौ, चना, मटर, चावल के मेल के नाम, गुणधर्म और उपाधियां हैं जिनका ज्ञान गांवों में भी सत्तर से ऊपर की पीढ़ी को है। इनके मेल से बने खाद्य पदार्थ तो अब अपवाद रूप ही हैं। आज इन अनाजों को मिलाकर रोटी खानेवाली पीढ़ी समाप्त सी है। अनाजों में भी व्यक्तिवाद आ घुसा है। गेहूं-चने का मेल गुरचनी, जौ-गेहूं का मेल गोजई, जौ-चना तथा चना-मटर-जौ का मेल बेझर, जौ-गेहूं-चने का मेल तिनाजा कहा जाता था। चना की उपाधि छप्पन परकारा और चावल की उपाधि राम जेवनारा है। छिलका उतरा जौ घाटि है।

चने की रोटी कठिनाई से पचने वाली है, सुपाच्य नहीं। उसे वही पचा सकता है जिसने इतना परिश्रम किया हो कि सोने के लिए थपकी न देनी पड़े। कहा है-

चना की रोटी बो खाइगौ,
जो बिना दबोरे सोय जायगौ।

मूंग-उड़द मिलाकर बनी दाल गंगा-जमनी कहलाती है। मूंग, उड़द, मसूर, अरहर, चना ये पांचों दाल पंचमेल दाल कही जाती है और दाल-बाटी के साथ बनती है।

लोकजीवन, लोकपरंपरा की पूरी खान-पान की व्यवस्था, दिनचर्या और ऋतुचर्या पर गहराई से विचार करती आ रही है पर आज के जीवन में दोनों का संतुलन डगमगा गया है। दिन अलग हो गया है और चर्या अलग। दिन में रात की चर्या और रात में दिन की चर्या आ बैठी है। ऋतुचर्या का एक तो ज्ञान ही नहीं रहा। दूसरे उसके अनुसार चलना आज की जीवनशैली में कठिन है। कोल्ड स्टोरों में विभिन्न ऋतुओं में आते फलों और शाक-भाजियों के स्वाद छीन लिए हैं। सब कुछ बारहों महीने मिलता है।

अतुलनीय डूंगरपुर की प्रतिमाएं

मेवाड़ में जैसे पोथियों का खजाना पोथीखाना, कलाकारों, गुणीजनों का खजाना रहा वैसे ही खानों-खदानों का खजाना खान-खाना कहा जाता है। पचासों क्षेत्र हैं जिनमें अत्यंत प्राचीनकाल से ही मेवाड़ का अवदान शीर्षस्थ रहा। उदयपुर के निकट झामरकोटड़ा की रॉक फास्फेट खान पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। यहां के शैवाल जीवाश्म के प्रस्तर का ऊपरी हिस्सा मगरमच्छ की चमड़ी जैसा प्रतीत होने के कारण उसे मगरमच्छा पत्थर के नाम से जाना जता है। सफेद ग्रीन और पिंक मार्बल के साथ-साथ इस संभाग में काला मार्बल भी पुरातनकाल से अपनी विशिष्ट पहचान दिये है।

एक ही काले पत्थर को तराश कर यहां के कारीगरों ने जो प्रतिमाएं बनाईं वे विदेशों तक ले जाई गईं। कहा जाता है कि नया रायपुर के सत्य सांई संजीवनी अस्पताल के मंदिर में पद्मनाम की जो प्रतिमा है वह 130 टन के पत्थर से तराशी गई। ऐसी प्रतिमा विश्व में अन्यत्र कहीं स्थापित नहीं है।

यही नहीं, चित्तौड़ के किले पर गोमुख कुंड परिसर में निर्भयनाथ के मंदिर में एक ही चट्टान पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश की तीन अलग-अलग बड़ी ही कलात्मक प्रतिमाएं हैं। इन्हें मीरां के पति भोजराज द्वारा बनवाई गई। इसी प्रकार द्वारिका के कृष्ण मंदिर में एक मीटर की ऊंचाई लिए द्वारिकाधीश की बड़ी ही भव्य प्रतिमा है। इसे डूंगरपुर के सोमपुरा जाति के देवजी ने बनाई। डाकोर के मंदिर में जो कृष्ण की प्रतिमा है वह भी इन्हीं के हाथ की तराशी हुई है। देवजी के लड़के श्यामजी ने शामलाजी में जो मंदिर है उसमें बिराजित प्रतिमा का निर्माण किया। श्यामजी का बेटा नानक्या भी माना हुआ कारीगर था। नाथद्वारा के श्रीनाथजी की मूर्ति इसी नानक्या द्वारा निर्मित है। यह नानजी के नाम से अधिक जाना गया जो अविवाहित ही रहा। इस संबंधी खोजबीन से और भी तथ्य उजागर हो सकते हैं।

होली के रंग...

(पृष्ठ दो का शेष)

रति-कामदेव कथावाचन :

बांसवाड़ा से चौदह किलोमीटर दूर तलवाड़ा गांव में धुलंडी से लेकर पंचमी तक रात्रि को कामण गाने की परंपरा अद्भुत रूप में मिलती है। यहां के व्यास ब्राह्मण डेढ़ सौ वर्षों से कथावाचक की तरह रति-कामदेव की पद्य कथा का गान कर श्रृंगार-हास्य को प्राणवान करते हैं। साफे तिलकधारी वाचक प्रतिपदा को मुख्य चौराहे, दूज को सोमपुरा चौक, तीज को जैन मंदिर वाणियों को चौक, चौथ को छोटी औदिच्य टोलकिया चौक तथा पांचम को बड़ा चौक में कामदेव को रिझाने का हेला देते हैं। इधर आदिवासी गांवों में आदिम गंधी लोग रति-कामदेव के प्रतीक लाल केशा का गान कर मग्न मस्त हुए लगते हैं।

-संजय व्यास

कान्यो मान्यो

साहित्य में चतुर कला

कान्यो दौड़ता हाफंता कांपता आया और बोला- अरे गजब हो गया। वह पूरा बोल नहीं पाया कि मान्यो बोला-क्या गजब और अनर्थ हो गया कान्यो भाई। बोला- चौराहे पर साहित्य में चतुर कला की बातें सुनकर आ रहा हूं। मान्यो बोला- चतुर कला कहां नहीं है। जहां आदमी है उसकी नश में, खून में, नाखून में चतुर कला है। साहित्य में ही क्यों, जीवनधर्मिता के पढ़ाये और लाड़ लड़ाये जाने वाले सभी विषय चतुर कला के पासपोर्टधारी हैं।

कान्यो को अचम्भे में पड़ता देख मान्यो ने अपनी पिटारी खोली- कल ही एक प्रवासी लेखक कह रहे थे कि उनकी कुछ महिनों पूर्व छपी कविताएं किसी ने अपने नाम से एक दूसरी पत्रिका में छपा ली। दो माह पूर्व एक स्थापितजी ने कहा कि उनका लिखा एक लेख भी इसी तरह किसी ने अपने नाम से वहां की मेगजीन में छपा दिया। पता तब पड़ा जब एक शोध छात्र ने वह लेख उस मेगजीन में और किसी अन्य पत्रिका में छपा देखा। दोनों शब्दश: एक जैसे तब उसने फोन किया तो स्थापित लेखकजी को कोई अचरज नहीं हुआ। शोध छात्र को उन्होंने कहा- भैया हिन्दी साहित्य में इस कला की भरमार है। तुम तो आंखों पर ऐनक चढ़ाकर देखो तो पता लग जायेगा। मेरा लेख आठ वर्ष पूर्व छपा है। और सुनो मेगजीन में जिनके नाम से छपा वे गतवर्ष मुझे मिलने आये थे और मैंने ही उस लेख की टाईप कॉपी उन्हें पकड़ाई थी।

कान्यो कान पर हाथ रख बोला- तुम झूठ तो नहीं कह सकते पर यह सब सुन मेरे नीचे की जमीन खिसकी लग रही है। मान्यो बोला- तो और सुनो। इसे सुन तुम ही नहीं, आकाश भी डोलता लगेगा। एक कोमल सज्जन थे जो सेवा के दौरान और बाद में भी मेवा ही पाते रहे। वे भाग्य में लिखाकर लाये थे सो अपनी थीसिस लिखने की बजाय किसी अन्य की थीसिस टाईप करा हींग लगी न फिटकरी उपाधि प्राप्त कर ली। उन्हें कोई व्याधि नहीं लगी। भगवान भी भाग्यवानों का साथ देता है रे बजरबट्टू। अब कान्यो क्या कहता। मान्यो तो एक से बढ़ चढ़कर एक ऐसी घटनाएं सुनाता जा रहा था। ऐसी सुनीं बातें सच मानने से तो इन्कार नहीं कर सकता था क्योंकि मान्यो को वह सत्यवादी खरिचन्द की औलाद की ही उपमा देता था। बोला- मान्यो अब अधिक मुझसे नहीं सुना जाता। मान्यो बोला- अबे कान्यो इतनी घटनाएं याद हैं कि तू इन्हीं पर थीसिस लिख उपाधि लेले। शोध के लिए जाना भी पड़ा तो मैं तुम्हारे साथ आकर सच से सामना करा दूंगा पर जाते-जाते एक किस्सा और सुनले। वह सुनाने लगा- एक लेखक अपनी पाण्डुलिपि लेकर बड़े लेखक के पास भूमिका स्वरूप आशीर्वाद लिखवाने गया। आशीर्वाददाता ने पाण्डुलिपि अपने पास रख ली। पाण्डुलिपि में दम था सो उन्होंने उसे अपने नाम से छपवाकर जिसकी पाण्डुलिपि थी उसी को भेंट कर दी।

बाइक पर चलता फिरता मोबाईल वर्कशॉप

ठेले पर हिमालय की तरह बाईक पर पूरा वर्कशॉप लेकर प्रतिदिन दूरदराज के गांवों में पहुंच जरूरतमंदों की घर बैठे सेवा करने का अनूठा संकल्प लिए मैकेनिक सलीम मोहम्मद सिंधी सन् 1990 से गतिशील बना हुआ है।

उदयपुर की सिंधी सरकार की हवेली में रहने वाला सलीम अपनी मोटर साइकल पर सवार हो सुबह घर से निकल जाता है। उसके वर्कशॉप में सबकुछ है जो सब प्रकार की जरूरतें फटाफट पूरी करने में सक्षम है।

वे सब औजार जो खराब पड़ी गाड़ी को दुरस्त कर देते हैं। पेट्रोल से भरी बोतलें हैं। हवा भरने का पाइप है। इमर्जेंसी टूल बॉक्स, फस्ट एड बॉक्स के अलावा क्लच वायर, गेर वायर, ब्रेक वायर, पानी निकालने के पम्प तथा मोटर बाइण्डिग का सामान रखता है। जनरेटर ठीक करने तथा खड्डों में से पानी बाहर निकालने का काम भी करता है।

अपने साथ अपने खाने-पीने का सामान, बिस्तर भी रखता है। प्रतिदिन सौ किलोमीटर का एरिया कवर कर लोगों की परेशानी को दूर कर वह अपने को परम सुखी एवं आनंदित महसूस करता है।

कहता है-दूसरों की परेशानी दूर करने में मुझे शकुन और आत्म संतोष मिलता है। जब लोगों का काम हो जाता है तो उनके चेहरे की मुस्कराहट मुझे नया शकुन देती है। इतने वर्षों में काम करते मैं हर व्यक्ति का चहेता बन गया हूं। यह कार्य प्यासे का कुए के पास जाना नहीं, अपितु कुए का प्यासे के पास जाना है।

अच्छे लेखक संघर्षजीवी होते हैं : डॉ. भानावत

सम्बोधन की स्वर्ण जयंती पर प्रेमकथा विशेषांक लोकार्पित

अच्छे लेखक संघर्षजीवी होते हैं, प्रेमजीवी नहीं। जो संघर्षरत रहता है वही निखार पाता है। कमर मेवाड़ी को किसी ऐंगल से देखें, संघर्ष ही उभर कर आता है। अच्छा होता, इस अवसर पर संबोधन का संघर्ष कथा अंक निकलता पर प्रेमकथा विशेषांक में भी गहराई से देखें तो संघर्ष गाथा ही प्रमुख लगती है। ये विचार राजसमंद के गांधी सेवा सदन में 27 मार्च को आयोजित हुए संबोधन के स्वर्ण जयंती समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत ने व्यक्त किए।

डॉ. भानावत ने कहा कि वह दिन याद आ रहा है जब भीड़ भरे चौराहे पर एक बैल लोगों के मन धारे कार्य के सफल-असफल होने का सूचक बना हुआ था। हम दोनों भी उस भीड़ के हिस्से हो गये। बैलधनी ने बैल के सम्मुख कमर की बात रखी। बैल गोलाई में घूमता कमर के सामने आ खड़ा हुआ और तीन बार अपने सिर को ऊंचा-नीचा कर 'धारा काम पार लगेगा' की हां दी।

इस समाचार को मैंने दैनिक हिन्दुस्तान में दिया था। 'बैल के भविष्य कथन से संबोधन का प्रकाशन' शीर्षक से यह समाचार छपा। तब से संबोधन और हमारी मैत्री, दोनों का ही महत्व बना हुआ है। डॉ. भानावत ने कहा कि एक ईमानदार लेखक को इतनी अधिक प्रशंसा और परस्कारों से न लादें कि उसके प्रकाश में वह चौंधिया जाय। बहुत अधिक प्रकाश आदमी को अंधा बना देता है।

मुख्य अतिथि कहानीकार सूरज प्रकाश ने संबोधन, कांकरोली और कमर मेवाड़ी को त्रिवेणी संगम बताया। अध्यक्ष वेद व्यास ने कांकरोली जैसे छोटे से गांव, कमर जैसे छोटे आदमी और संबोधन जैसी छोटी पत्रिका के हवाले से कमर के धारदार संघर्ष, ओजस्वी फक्कड़पन और धुन की दीर्घ चर्चा की। मधुसूदन पांड्या ने कमर मेवाड़ी को संघर्षशील जिद्दी व्यक्ति कहते संबोधन को साहित्यिक पत्रिका इतिहास में कीर्तिमान बताया। माधव नागदा ने संबोधन की स्वर्ण यात्रा का जिक्र करते हुए बताया कि उसमें छपी रचनाओं ने आम आदमी का पक्ष लिया तथा उनके सपनों, अरमानों, आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को वाणी दी। राजकुमार जैन 'राजन' ने बालसाहित्य की बुनियादी आवश्यकता पर बल दिया।

समारोह में गुणसागर कर्णावट, चतुर कोठारी, डॉ. रेखा व्यास, त्रिलोकी मोहन, देशबंधु आचार्य, फतहलाल गुर्जर, डॉ. गोपाल सहर, रेवतीरमण शर्मा आदि कई महानुभावों ने संबोधित किया।

कमर मेवाड़ी ने संबोधन की अगली यात्रा को नये रूप में प्रारंभ करने का संकेत दिया और कहा कि इसके लिए मित्रों की सलाह और विचार विमर्श करना होगा।

समारोह में संबोधन के शुभेच्छु, साहित्यकार, समाजसेवी 50 व्यक्तियों को राजसमंद रत्न, कविताश्री, कथा-शिरोमणि, गजल सम्राट तथा पत्रकारिता सम्मान दिया गया। मंचासीनों को संबोधन के सहयात्री के रूप में वैशिष्ट्य प्रदान किया गया। संयोजन डॉ. नरेन्द्र निर्मल का रहा।

अलर्ट संस्थान सम्मानित

उदयपुर। राजस्थान दिवस पर गोगुन्दा उपखंड कार्यालय पर आयोजित समारोह में अलर्ट संस्थान को प्रशासन द्वारा मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन योजना के तहत बगडुंदा क्षेत्र में जल संरक्षण के लिए किये गये कार्यों के फलस्वरूप प्रशस्ति पत्र एवं मोमेंटो प्रदान किया गया। यह सम्मान गोगुन्दा प्रधान पुष्कर तेली एवं एसडीएम सत्यनारायण आचार्य ने संस्थान के अध्यक्ष जितेन्द्र मेहता को प्रदान किया।

शब्द रंजन के सहयोगार्थ

वार्षिक व्यक्तिगत	250/-
वाषिक संस्थागत	500/-
संरक्षक	11000/-
विशिष्ट सदस्य	5000/-
साहित्यिक चौपाल	500/-
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/-
आजीवन सदस्य	3000/-

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित।
सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।